मेरे लफ़्ज़ों की गूंज

कवि
साहिल



भूमिका

प्रस्तुत कविता-संग्रह **'मेरे लफ़्ज़ों की गूंज'** कविवर **'साहिल'** के जीवन के उन सभी अनछूए, अप्रत्याशित और अकल्पनीय पहलुओं से परिचित करवाता है जिन्होंने इनके जीवन को सुख, दुख ,अभाव, संघर्ष और कमियों परिपूर्ण बनाकर उसके सुगम प्रवाह दिया। इन्होंने जितने भी अपने जीवन के उतार चढ़ाव देखे उन सभी का यथास्थिति प्रदान की है। ऐसी स्थिति **'दुख का वह समय'** कविता में दिखाई देती है —

"वो समय था जब हँसी भी रूठ गई,
खुशियों की राहें सब छूट गई।
हर पल लगता था भारी बोझ,
जैसे जीवन हो केवल एक खोज।"

इसी तरह इन्होंने अपने परिवार, माता-पिता, बहन , दादा और दादी, दोस्त तथा रिश्तेदारों के प्रति जो भावना अपनी कविताओं में प्रकट की है वह अनुपम है—-

"तूने मुझे पाला और नीचे गिरने पर उठाया मां,
जब भी ऐसा लगा कि मुझे किस चीज की जरूरत है,
तुमने सबसे पहले हाथ बढ़ाया मां"

— माँ

"बहन का प्यार है सबसे निराला,
जैसे जीवन में हो उजियाला।
उसकी हँसी है खुशियों का गीत,
उसकी बातें हैं दिल का मीत।"

— बहन

"दादा-दादी का प्यार है अनमोल,
उनसे मिलता है जीवन का गोल।
उनकी दुआएं हैं सबसे बड़ी दौलत,
उनका आशीर्वाद है सच्ची नियामत।"

"पिता हैं साहस की दीवार,
जो बचाते हैं 'साहिल' को हर बार।
गिरने न देते आँधी में,
खड़े रहते हैं चट्टान की तरह।"
—- पिता

कविवर ने अपनी कविताओं में बाहरी भावनाओं के साथ साथ हृदयगत भावनाओं जैसे प्रेम, अहसास, चरित्र, डर, उदासी, छल , द्वेष और ईर्ष्या आदि को भी प्रवाह देने का सफल प्रयास किया है:-

" दिल इतना कच्चा था,
तो धोखा जैसा ऐसा काम क्यों किया"

"अहसास वो धड़कन है,
जो किसी अपने के पास होने का इशारा देती है।"

"मेरी प्रियतमा है सुबह की किरण,
जो मिटा दे मन का हर भ्रम।
उसकी आंखों में झलकता है प्यार,
जैसे सागर में चमकते हों हजारों सितार।"

"सत्य और ईमानदारी की राह,
बनाती है जीवन को उज्ज्वल प्रवाह।
झूठ और छल से जो बचता है,
वही सच्चे सुख को रचता है।"

यही नहीं, कविवर **'साहिल'** का अपने देश और भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज और राजनीति के प्रति भी ध्यान केंद्रित रहता है। जहां वे समाज और संस्कृति के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए दिखाई देते हैं तो वहीं पर वे इन पर व्यंग्य भी करते दिखाई देते हैं :-

"कलम बदल गई, स्याही बदल गई,
बदल गए सब रंग भाई,
पेड़ों को काटकर, बनाये थे जो पन्ने,
उन पर लिख रहे भ्रष्टाचार के सिपाही।"

"कमजोर लोग,
देश के युवाओं को शक्तिशाली,
बना पायेंगे कहां?"

दूसरी ओर इन्होंने अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रकृति चित्रण का भी प्रयोग किया है। इन्होंने प्रकृति के विभिन्न पहलुओं को अपनी कविताओं में प्रकट किया है। इनमें प्रकृति का महत्व और विनाश दिखाया है:-

"ये कैसा आघात है,
कहीं बाढ़ तो कहीं बरसात है,
मानव खुद को समझकर अजेय,
प्रकृति को करने चला है विजय।"

"बादल गीत गाते रहे,
बूंदे धुन बनातीं रही,
चकवा चकवी चकित हो गये,
कुहासे कुठार एक हो गये,
आँखों के अश्रु अनेक हो गये।"

"प्रिय और प्रकृति दोनों हैं एक,
सच्चाई, सुंदरता और प्रेम का लेख।
एक दिल में बसती, एक जग में,
दोनों ही जीवन के मधुर राग में।"

इस तरह कविवर 'साहिल' ने ' **मेरे लफ़्ज़ों की गूंज** ' शीर्षक कविता संग्रह में अपने जीवन के दबे-कुचले, सहमें पहलुओं को अपनी लेखनी के माध्यम से कविताओं में व्यक्त करने का प्रयास किया है। आशा है कि इसको पढ़कर आप सभी पाठकों को अच्छा लगेगा।

"हर शब्द ,हर सांस, एक धड़कन की तरह गूंजता है,
दिल की गहराईयों से निकलकर,
फिर उसी दिल में समा जाता है"

अज्ञात

विषय-सूची

62. किताब
63. मिसाल
64. जन्म और मृत्यु
65. नदी और समुद्र
66. किरदार और कहानी
67. अवसर और चुनौती
68. सफलता और सफ़र
69. महक
70. जागीर
71. मददगार
72. कलाकार और कला
73. उड़ान
74. मुकाम
75. मझधार
76. भंवर और पतवार
77. कोशिश
78. समाज
79. खुदा
80. बहन का प्यार
81. जुबान और जज्बात
82. मेरे लफ़्ज़ों की गूंज ...
83. चरित्र
84. मामा के घर
85. दादा और दादी
86. बुढ़ापा
87. आग और पानी
88. शहर और गांव
89. समझ
90. बेटी की अहमियत
91. युवा
92. प्रिय और प्रकृति

मां

तूने मुझे पाला और नीचे गिरने पर उठाया मां,
जब भी ऐसा लगा कि मुझे किस चीज की जरूरत है,
तुमने सबसे पहले हाथ बढ़ाया मां,
कैसे मैं तेरी इस बात का मोल चुकाऊं,
इसके लिए तो जन्मों जन्म लग जाएं,
फिर भी न इसका मोल उतरेगा।
तुमने हर पल छाया देकर,
इस दुनिया की धूप से बचाया मां,
मेरे जीवन को सही पथ दिखाकर,
एक शिक्षक की भांति पढ़ाया है मां,
मैं भी तुम्हारी इच्छाओं को अनसुना करता रहा,
फिर भी तुमने कभी दोष न दिया मां,
तुमने अपनी इच्छाओं से पहले,
मेरी इच्छाओं को पूरा करना जरूरी समझा मां,
मैं फिर भी तुमको दोष देता रहा,
वो सब पढ़ लिखकर भी नहीं पा पाया,
जो तुमने मुझे मेहनत और मज़दूरी करके दिलाया मां।
वायदा है 'साहिल' का तुम्हारा सपना पूरा करके दिखाउंगा।

पिता

पिता हैं छाँव घने पेड़ों की,
थकान मिटाएं हर डगर की।
मौन रहकर भी सब कह जाते,
कर्तव्य निभाकर मुस्कुराते।

पिता हुें त्याग का गहरा सागर,
हर दुख को पीकर रहते जागर।
सपनों को अपने पीछे छोड़,
बच्चों के सपनों को देते मोड़।

पिता हैं साहस की दीवार,
जो बचाते हैं 'साहिल' को हर बार।
गिरने न देते आँधी में,
खड़े रहते हैं चट्टान की तरह।

मातृ भाषा हिन्दी

देश की जनता की भावनाओं को समेटने वाली,
आदिकाल से उत्पन्न होने वाली,
साहित्य की भाषा बनने वाली,
वो भाषा हिन्दी है।
जो भाषा सबको प्रिय और मीठी लगती,
जिसने कवियों और लेखकों के सुर बांधे,
भक्ति और रीति का संगम, वर्तमान में बनाने वाली,
सभी तरह के गुणों से संपन्न,
मील का पत्थर जो बनी,
वो भाषा हिन्दी है।
जिसने कवियों और कलाकारों के जीवन के पहलुओं को,
जनता तक पहुंचाया।
साहित्य का प्रतिबिंब और वाहक जो बनी,
वो भाषा हिन्दी है।
पाखंडों और अंधविश्वासों को जिसने ठुकराया,
सच्चा आध्यात्मिक ज्ञान जिसने हमें दिया,
तुलसी, सूर और मीरा की भक्ति को प्रवाहित किया,
मानवता का परिचय दिया जिसने,
वो भाषा हिन्दी है।
कर विश्व भ्रमण जिसने,

वसुधैवकटुंबकम् का सार बताया,
पूर्व और पश्चिम को जिसने मिलाया,
जो शिकागो में विवेकानंद जी के साथ गई,
वैश्विक पटल पर भारत का मान बढ़ाया,
वो भाषा हिन्दी है।
जिस भाषा का शब्द नित नवजात के मुख पर रहा,
पहले पुकारा था जिसने जहां पर,
हमेशा कहती है उनसे,यह मेरी नियति है,
जिस स्वर में हमने सुना 'मां' शब्द को,
वो भाषा हिन्दी है।
हिंदी ही सदा से प्रिय हमें और हमारे कर्ण- हृदय को,
आदि से आधुनिक काल तक साहित्य को,
जिसने संजोया और तराशा है,
अपने प्रवाह में जो बहती रही,
'साहिल' के साथ जो चले,
वो भाषा हिन्दी है।

बचपन

बचपन की वो प्यारी बातें,
मासूम हंसी, नन्हीं सौगातें।
खेल-खिलौनों की दुनिया रंगीन,
हर कोना लगता था स्वप्निल बगीचीन।

न चिंता कल की, न बोझ कोई,
हर पल में बस खुशियाँ ढोई।
कभी मिट्टी में घर बनाते,
कभी आसमान को छूने जाते।

मीठी शरारत, भोली अदाएँ ,
छोटे-छोटे सपनों की छायें ।
माँ की गोदी, पिता का साया,
हर दुख-दर्द से मिलता सहारा।

बचपन है जीवन का उत्सव,
निर्मल मन, सच्चा विश्वास।
वो सुनहरे पल लौट न पाएँ ,
पर 'साहिल' की यादों में सदा मुस्कुराएँ ।

कॉलेज की यादें

क्या पता था किसी दिन इस कॉलेज की ईंट इमारत से,
इस क़दर मोहब्बत हो जाएगी,
और जो आज परिस्थितियों की हकीक़त है
किसी दिन की यादों की सबसे खूबसूरत तस्वीर बना जाएगी,
यहां दोस्ती की दो महफ़िल सजी चुकी है,
एक तो यहीं पर छूट जाएगी और
एक हमारे साथ जिंदगी के सफ़र पर चली जाएगी।
आज वक्त को रोकने का जी चाहता है,
न जाने क्यों छूट जाने से डर लगता है,
बच्चे बनकर आए थे हम सब,
एक-दूसरे से कितने पराये थे हम सब।
कॉलेज में आकर ही हम सब एक हो गए,
हंसने खेलने के बहाने अनेक हो गए,
इस सफ़र की शुरुआत हुई थी तीन साल पहले,
क्लास इंट्रो से जो शुरू हुई थी।
जैसे तैसे करके हमने निकाला था पहला साल,
बहुत खुश हुए अब बचे हैं सिर्फ दो साल,
पहले सेमेस्टर ने हमारी असलियत दिखाई,
एक-दूसरे से बोले अब कुछ नहीं है बस में भाई।
सोचते थे कि कब यहां से जाएंगे,
अब यह भी पता नहीं कि आगे का समां पायेंगे या नहीं पायेंगे।
याद आयेगा हम सबको कॉलेज का यह दौर,
सुबह सुबह कॉलेज में आना,
वो नीरज सर का पहला लेक्चर लेना,
लेट होने पर दौड़ लगाना,
अटेंडेंस के लिए उनको मस्का लगाना,
राजेंद्र सर का एक एक क्लास का हिसाब रखना,
वो जसबीर सर के साहित्यिक अनुभव और ज्ञान,
वो जसविंदर सर की मीठी मीठी बातें,

वो वीरेंद्र सर का लोकप्रिय डांस स्टेप,
यह सब बहुत याद आयेगा हमें,
ना चाहते हुए भी इस भीड़ का हिस्सा हो गए,
ना जाने कब हम कॉलेज का एक किस्सा हो गए,
जिन बातों का दु:ख था आज उन्हीं से खुशी मिलती है,
न जाने दोस्तों क्यों दिल में कुछ और आता है।
आज वक्त को रोकने का जी चाहता है।
वो ज्योति मैम, सुनीता मैम और नेहा मैम का प्यार, स्नेह व वात्सल्य भाव
वो कुणाल सर की मुस्कुराहट जिसके कायल थे हम सब,
वो अंकलों के साथ सुबह शाम बातें करना,
और वो मेरे प्राण तत्वों दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करना,
अब यह सब हमें कहां मिलेगा।
'साहिल' ने कुछ लिखा है और कुछ दिल में अब भी बाकी है,
शायद कुछ पल का साथ अब भी बाकी है,
डिग्री तक पहुंचकर भी कुछ छूट सा रहा है,
क्योंकि जा रहा है जो वक्त,
वो दोबारा आने से रहा,
इसलिए वक्त को रोकने का जी चाहता है।

देखा है...

मां तुमको देखा है मैंने,
कभी मज़दूरी करते हुए,
तो कभी एक एक पैसा बचाते हुए,
फिर भी देखा है।
कभी डांटकर समझाते हुए,
तो कभी प्यार करते हुए,
कभी समस्याओं का सामना करते हुए,
फिर भी देखा है।
कभी अभाव में देखा,
तो कभी दुखी देखा,
तो कभी जीवन जीते देखा,
फिर भी देखा है।
बच्चे से युवा बनाने की नीति देखी,
तो कभी अध्यापक का स्वरूप देखा,
फिर भी देखा है।
स्कूल भेजते देखा, कॉलेज भेजते देखा,
सुबह सवेरे घर के काम करते देखा,
सुख भी देखा और दु:ख भी देखा,
तुम्हारा रुतबा और सम्मान भी देखा,
फिर भी देखा है।

कभी जिंदगी जीने का ढंग देखा,
तो कभी समाज के साथ चलते देखा,
कभी तुम्हारा विवेक देखा,
तो कभी तुम्हारा विद्रोह देखा,
कभी तुम्हारी ममता देखी,
तो कभी तुम्हारा प्रेम देखा,
'साहिल' ने कलम चलाई,
तो शब्दों में तुम्हारा चेहरा देखा,
फिर भी देखा है।

भारत और हिंदी

आज हिंदी को बढ़ाने के लिए कोई तो हो,
हिन्द का अभिमान है हिंदी,
लाज भाषा की बढ़ाने वाला कोई तो हो,
है कबीरा अब कहां जो मन को अनहद नाद दे,
सूर, तुलसी और मीरा के विचारों का ज्ञान कराने वाला कोई तो हो।
विवेकानंद और दयानंद जी हुए श्रेष्ठ संत,
याद करे दुनिया, सदैव वो जन्म हो,
जीवन जिएं, कि लोग प्रेरणा ग्रहण करे,
महात्माओं जैसा आदर्श चरित्र हो।
क्रांतिकारियों ने अपने जीवन को न्योछावर किया,
धर्म, कर्म और ध्यान में बसा उनका बलिदान हो।
विश्व को समझकर जीवन का रंगमंच,
उस रंगमंचकार का स्मरण प्रतिक्षण हो।
जिन्होंने दिलाई हमें आजादी,
उन समाज-सुधारकों के लिए सदैव मन में नमन हो।
निज इष्ट देव का पवित्र हृदय सिंहासन हो,
ध्यान बस उसी का रहे, वो मन चाहिए,
पाहन की प्रतिमा भी प्राणवान हो,
उसको भक्त की भक्ति का धन चाहिए।
करती नहीं है भेद माँ भारती,

जैसे केरल , वैसे काश्मीर हो,
स्वार्थवाद हावी हुआ राजनीति पर,
अलगाव वाली नेताओं की तहरीर है,
देख अपनी ही संतानों के मध्य मचा घमासान,
भारत जननी के हृदय बड़ी पीर है।
विविधता में एकता, यही भारत की पहचान हो,
हर संस्कृति में रचा बसा ये भारत महान है,
हर कोने में बसी गंगा की धारा, हिमालय की शान हो,
रेगिस्तान की तपिश और समंदर की मुस्कान हो।
'साहिल' की मिट्टी में है खुशबू,
यहां के जल में जान है,
हर कण में बसा मां भारती का प्राण हो,
गर्व से कहो, ये वतन कल भी हमारा था,
आज भी हमारा है और आगे भी हमारा हो।

बात

बातों का भी रंग निराला,
कभी मीठा, कभी मतवाला।
कभी सुकून का झरना बनती,
कभी दिल में आग लगाती।

बातें जब हों प्यार भरी,
मन में खिलें कली कली।
जब हों कटु , तीर बन जाएं ,
रिश्तों की डोर तोड़ जाएं।

बातों से ही दिल जुड़ते हैं,
बातों से ही मन बिखरते हैं।
सही समय पर सही कहा,
तो जीवन में सुख बहा।

बात है तो रिश्ते गहरे,
बात है तो सपने सुनहरे।
बातों में ही छुपा संसार,
बातों से ही जीवन साकार।

बात है तो व्यापार है,
बात है तो यार है,
बातों से ही बना यह खुमार है,
'साहिल' के ऊपर बातों का प्यार बेशुमार है।

लक्ष्य

लक्ष्य वही है जो जीवन को दिशा देता है,
अंधेरों में भी मन को प्रकाश देता है।
राह कठिन हो, बाधाएँ अनगिनत आएँ,
संकल्प अडिग हो तो मंज़िल मिल ही जाए।

लक्ष्य बिना जीवन अधूरा सा लगता है,
हर प्रयास व्यर्थ और सपना बुझा सा लगता है।
पर जब ध्येय स्पष्ट हो मन के भीतर,
हर कदम बन जाता है सफलता का पथिक।

धैर्य और परिश्रम जब साथी बन जाते हैं,
तो असंभव भी संभव में बदल जाते हैं।
लक्ष्य वही है जो गिरकर उठना सिखाता है,
हार को जीत की सीढ़ी बनाता है।

इसलिए लक्ष्य को सदैव अपनाओ,
हर दिन उसे पाने का प्रण निभाओ।
'साहिल' का लक्ष्य ही देता है उसे सही विश्वास।

पल

पल तो बस एक झोंका है,
कभी हँसी में ढल जाता है,
कभी आँसू बनकर बह जाता है।

पल तो बस एक धड़कन है,
कभी दिल को सुकून देता है,
कभी बेचैनी में डूबो जाता है।

पल तो बस एक सपना है,
कभी आँखों में चमक भर देता है,
कभी अधूरा रहकर चुभ जाता है।

पल तो बस एक कहानी है,
कभी यादों में बस जाता है,
कभी समय की धूल में खो जाता है।

पल को थाम लो, जी लो,
क्योंकि यही पल जीवन है,
यही पल 'साहिल' का अनमोल धन है।

परिवार

घर की दीवारों में बसी है जो गर्माहट,
वह परिवार की धड़कनों से आती है।

सुख-दुख की हर राह पर संग चलते,
यह डोर कभी न टूटने पाती है।

माँ की ममता, पिता का सहारा,
भाई-बहन का प्यारा नज़ारा।

हँसी-खुशी के गीत यहाँ गाए जाते,
आँसू भी मिलकर पोंछे जाते।

संघर्षों में शक्ति, सपनों में उड़ान,
परिवार ही देता है जीवन को पहचान।

हर रिश्ते में छुपा है अपनापन,
यही है जीवन का सबसे बड़ा धन।

जहाँ मिलते हैं दिल बिना किसी शर्त,
वही परिवार है, 'साहिल' के जीवन की असली दौलत।

पंख

पंखों पर लिखी है उड़ान की कहानी,
हर पर में छुपी है आसमान की निशानी।

हवा से बातें करते, सपनों को छूते,
सीमाओं को तोड़ते, ऊँचाइयों को ढूँढते।

नन्हे पर हों या विशाल पंखों का विस्तार,
हर पर में छुपा है साहस का उपहार।

झोंकों से लड़ते, तूफ़ानों से भिड़ते,
पर ही तो हैं जो मंज़िल तक ले चलते।

धरती से आकाश तक का है ये सफ़र,
'साहिल' के जीवन की ताक़त हैं ये अनमोल पर।

दिल और धोखा

दिल इतना कच्चा था,
तो धोखे जैसा ऐसा काम क्यों किया।
प्रीति और विवाह की जो बातें की थीं,
वह अभिसार की मीठी स्मृतियां याद आयीं।
जब वह अपने उन्मुक्त उसांसों में,
अपनी नशीली चितवनों में,
मानों अपने प्राण निकाल कर उसके चरणों में रख देता था।
मगर धोखे और छल का जाल भी तो वहां था।
दो-चार राहगीर 'साहिल' की जिंदगी का तमाशा देखने खड़े हो गए।

कारवां

रेत के समंदर में, चलता है एक कारवां,
धूप की तपिश में भी, सपनों का आसमान।

ऊँटों की घंटियों की गूंज, जैसे कोई गीत पुराना,
हर कदम पर लिखता है, सफ़र का अफ़साना।

थकान से बोझिल पाँव, पर हौसले हैं जवान,
मंज़िल की तलाश में, चलता रहता कारवां।

रात की चांदनी में, तारों का संग-साथ,
अंधेरों को चीरकर, बढ़ता है हर एक हाथ।

कारवां सिर्फ़ सफ़र नहीं, एक विश्वास की पहचान,
जहाँ हर मुसाफ़िर सीखता है, 'साहिल' की राहों में छुपा है जहान।

चिराग

अंधेरों में जब राहें खो जाती हैं,
एक छोटा-सा चिराग उम्मीद जगाता है।
तेज़ आँधियों से लड़ता हुआ,
अपनी लौ से हौसला दिलाता है।

नन्हीं-सी रोशनी, पर शक्ति अपार,
अंधकार को चीरने का रखता है सार।
थकान भरे मन को सुकून दे जाता,
हर कोने में उजाला फैलाता।

चिराग सिर्फ़ रोशनी नहीं, प्रतीक है विश्वास का,
संघर्षों में डटे रहने का, हर प्रयास का।
जलता है खुद, पर औरों को राह दिखाता,
त्याग और सेवा का संदेश सुनाता।

जब जीवन में अंधेरा छा जाए,
चिराग की लौ याद आ जाए।
छोटा-सा दीपक भी बता देता है,
कि 'साहिल' पर कब सवेरा आता है।

जुदाई

तेरी यादों का साया अब भी साथ चलता है,
हर मोड़ पर तेरा नाम दिल से निकलता है।

खामोशियों में भी तेरी आवाज़ सुनाई देती है,
रात की तन्हाई में तेरी तस्वीर मुस्कुराती रहती है।

जुदाई का दर्द लफ़्ज़ों में कहां समा पाता है,
ये तो बस दिल की गहराइयों में उतर जाता है।

तेरे बिना हर खुशी अधूरी सी लगती है,
तेरे बिना ये दुनिया सूनी-सूनी सी लगती है।

मिलन की आस में हर पल गुज़र जाता है,
तेरे लौट आने का ख्वाब ही जीने का सहारा बन जाता है।

जुदाई ने सिखाया है मोहब्बत का असली मतलब,
तेरे बिना 'साहिल' को हर सांस भी अधूरी लगती है अब।

हौसले

हौसले वो दीप हैं, जो अंधेरों में भी जलते हैं,
तूफ़ानों से लड़कर भी, अपनी राह खुद चुनते हैं।

गिरकर भी जो उठ जाएं, वो हौसले कहलाते हैं,
मुश्किलों की राहों में, जो मंज़िल तक पहुँच जाते हैं।

पत्थरों से टकराकर भी, जो दरिया रुकते नहीं,
हौसले ही हैं वो जज़्बे, जो हार मानते नहीं।

सपनों को सच करने का, बस एक ही सहारा है,
हौसला अगर साथ हो, तो हर रास्ता हमारा है।

आंधियों से मत डरना, ये तो राह दिखाती हैं,
हौसले की लौ जलाकर, 'साहिल' की मंज़िलें पास आती हैं।

किस्मत

कभी धूप सी तपती है किस्मत,
कभी चाँदनी सी बरसती है किस्मत।
कभी राहों में कांटे बिछा देती,
कभी फूलों से सजती है किस्मत ।

मेहनत के पसीने से सींचो तो,
पत्थर भी सोना बन जाती है किस्मत ।
आलस की छाँव में बैठो अगर,
तो सपनों को रुला जाती है किस्मत।

कभी अनजाने दरवाज़े खोल देती,
कभी अपनों से भी दूर कर देती।
कभी आँसुओं में डुबो देती,
कभी हँसी की सौगात दे देती।

सच तो यही है, साथी बनाओ इसे,
शिकायतों से नहीं, कर्मों से सजाओ इसे।
क्योंकि किस्मत वही लिखती है कहानी,
जो 'साहिल' की मेहनत से रंग भरता है जुबानी।

मेहनत

पसीने की हर बूँद में छिपा है उजियारा,
मेहनत से ही सजता है जीवन का किनारा।
कांटों भरी राहें भी फूलों सी लगती हैं,
जब हौसले संग मेहनत की डोर बंधती हैं।

सपनों की ऊँचाई मेहनत से मिलती है,
हर ठोकर से इंसान की ताक़त खिलती है।
धैर्य और परिश्रम जब साथी बन जाते हैं,
असंभव भी संभव की राह दिखाते हैं।

मेहनत का फल मीठा, अमृत सा लगता है,
संघर्ष का हर पल जीवन को सजाता है।
जो थक कर भी रुकते नहीं, चलते जाते हैं,
वही इतिहास में अपना नाम लिखाते हैं।

इसलिए मेहनत को जीवन का आधार बनाओ,
हर कठिनाई को मुस्कुराकर स्वीकार बनाओ।
सच्ची लगन और कर्म से जो राह चुनोगे,
'साहिल' के सफर पर अपना नाम गुनोगे।

आंसू

आंखों की कोरों से ढलते,
मन की गहराइयों से पलते,
ये आंसू शब्दों के साथी हैं,
जो कह न पाए, वही बताते हैं।

खुशी में भी झलकते हैं,
दर्द में भी छलकते हैं,
कभी मोती बन चमकते हैं,
कभी सागर बन बहकते हैं।

ये दिल की भाषा होते हैं,
अनकही व्यथा के गवाह होते हैं,
कभी राहत का अहसास दिलाते,
कभी बिखरे मन को सुलझाते।

आंसू कमजोरी नहीं, ताकत हैं,
ये इंसानियत की पहचान हैं,
जो रो सके, वही जी सके,
'साहिल' जैसे ये जीवन की सच्ची उड़ान हैं।

अहसास

अहसास वो हल्की सी हवा है,
जो चेहरे को छूकर गुजर जाती है,
बिना आवाज़ किए दिल में एक मीठी सी लहर छोड़ जाती है।

अहसास वो धूप की किरण है,
जो ठंडी छाँव में उतर आती है,
मन के अंधेरों को चीरकर नई उम्मीद जगाती है।

अहसास वो नमी है आँखों की,
जो शब्दों से पहले बोल जाती है,
कभी दर्द बनकर, कभी खुशी बनकर
दिल की गहराइयों को खोल जाती है।

अहसास वो धड़कन है,
जो किसी अपने के पास होने का इशारा देती है,
बिना कहे, बिना सुने रिश्तों को और गहरा कर देती है।

अहसास ही जीवन की भाषा है,
जो हर दिल समझ लेता है, कभी मुस्कान में,
कभी खामोशी में 'साहिल' उसमें अपना रंग बिखेर देता है।

दुनिया

दुनिया एक रंगमंच है, जहाँ हर कोई किरदार है,
कभी हँसी की गूँज बिखेरता, कभी आँसुओं का भार है।

यहाँ सपनों की नदियाँ बहतीं, आशाओं के दीप जलते हैं,
कभी अंधेरों में डूब जातीं, कभी उजालों से पलटते हैं।

दुनिया एक किताब है अनोखी, हर पन्ना नई कहानी कहता,
कभी सच्चाई की झलक दिखाता, कभी भ्रम का जाल बुनता रहता।

यहाँ रिश्तों की डोरें जुड़तीं, तो कभी बिखर भी जातीं हैं,
मोहब्बत की खुशबू महकती, 'साहिल' के लिए नफ़रत की आँधियाँ आतीं हैं।

दुनिया एक सफ़र है लंबा, जहाँ ठहराव नहीं मिलता,
हर मोड़ पर सीखें मिलतीं, हर कदम पर अनुभव खिलता।

इस दुनिया को समझना मुश्किल, पर जीना आसान बनाना है,
प्यार, दया और सच्चाई से, इसे स्वर्ग सा सजाना है।

मेरे जीवन की यादें

यादें हैं जीवन की अनमोल निशानी,
कभी हंसी, कभी आँसू की कहानी।
बीते पलों की मधुर छवि,
मन में जगाती सुखद लहरें सभी।

बचपन की किलकारियां अब भी गूंजती,
खेलों की धुनें मन में झरतीं।
माँ की ममता, पिता का सहारा,
वो दिन थे सचमुच प्यारा।

यौवन की राहें, सपनों का संसार,
दोस्तों संग बिताए अनगिनत त्यौहार ।
हँसी-ठिठोली, गीतों की तान,
यादें बन गईं जीवन की जान।

संघर्ष के पल भी याद दिलाते,
कैसे गिरकर भी कदम बढ़ाते।
हर कठिनाई ने सिखाया यही,
हिम्मत से जीना है जीवन सही।

यादें हैं दीपक की लौ समान,
जो अंधेरों में देतीं पहचान।
जीवन की राहें चाहे बदल जाएँ,
यादें सदा मन को सहलाएं।

'साहिल' के जीवन की यादों का खज़ाना,
है सुख-दुख का अनमोल तराना।
हर पल को दिल में संजोकर रखूँ,
यादों से ही जीवन को सजाऊँ।

महफ़िल

महफ़िल में जब दीप जले,
हर चेहरा जैसे फूल खिले ।
हँसी की गूंज, सुरों की तान,
दिलों को जोड़ें, मिटाएं गुमान।

सजती है बातें, रंगों के संग,
हर लफ़्ज़ बने जैसे मधुर तरंग।
दोस्ती की खुशबू, अपनापन का रंग,
महफ़िल में मिलता है जीवन का ढंग।

कभी गीत, कभी ग़ज़ल की रवानी,
कभी कहानियों की सुहानी निशानी।
हर दिल से उठती है एक दुआ,
खुशियों से भर जाए हर दिशा।

महफ़िल है आईने सा संसार,
जहाँ दिखे 'साहिल' का असली प्यार।
साथ मिलकर जो पल बिताए,
वो यादें सदा दिल में समाए।

मंज़िल

राहों में धूप है, कहीं छाँव भी,
कदमों के नीचे कांटे हैं, कहीं घास भी।
हर मोड़ पर ठहराव का इम्तिहान है,
पर आगे बढ़ना ही असली पहचान है।

मंजिल पुकारती है हर थके मुसाफिर को,
सपनों की लौ जगाती है दिल के भीतर को।
गिरकर उठना, फिर चलना, यही सफ़र का गीत है,
हौसलों से ही बनता इंसान का प्रीत है।

जो थककर बैठ जाए, वो पीछे रह जाता है,
जो दर्द को सह ले, वही आगे बढ़ पाता है।
मंज़िल कोई जगह नहीं, एक एहसास है,
मेहनत और विश्वास का ही विश्वास है।

चलते रहो, रुकना मत, चाहे राह कठिन हो,
हर कदम पर जीत है, अगर जज्बा संगिन हो।
मंज़िल उसी की होती है, जो हार नहीं मानता,
सपनों को सच करने का साहस 'साहिल' पहचानता।

कर्तव्य

कर्तव्य है जीवन का आधार, जिससे मिलता हर काम में सार।
निष्ठा से जो इसे निभाए, वह सच्चे सुख को अपनाए।

कर्तव्य पथ कठिन हो सकता, पर यही सफलता का रथ बनता।
त्याग, परिश्रम और विश्वास, लाते जीवन में उज्ज्वल प्रकाश।

स्वार्थ से ऊपर उठना सिखाए, मानवता का दीप जलाए।
कर्तव्य ही धर्म का रूप है, यही जीवन का अनूप स्वरूप है।

जो कर्तव्य को मानते हैं, वे सदा ऊंचाई पाते हैं।
कर्तव्य पालन से ही 'साहिल', बनता है सच्चा महान।

चेहरे

चेहरा आईना है मन का,
हर भाव लिखता है क्षण का।
मुस्कान खिले तो रोशनी फैले,
आँसू गिरें तो बादल छाए।

चेहरे पर झलकती है थकान,
फिर भी छुपा लेता है अरमान।
कभी सख़्त, कभी कोमल सा,
कभी मौन , कभी बोलता सा।

झुर्रियों में छिपी कहानियाँ,
हँसी में बसी जवानियां।
चेहरा सिर्फ़ पहचान नहीं,
जीवन की पूरी दास्तान है यही।

चेहरे पर लिखा हर रंग,
दिल की गहराई का संग।
चेहरा है कविता की तरह,
'साहिल' हर पंक्ति में छुपा सागर सा।

राह

राहें अनगिनत, सपनों से भरी,
कभी धूप में तपती, कभी छाँव में ठहरी।
कदमों की आहट से गूंजती हैं ये,
हर मंज़िल की चाहत से जुड़ती हैं ये।

कभी पथरीली, कभी फूलों सी नरम,
कभी आसान, तो कभी कठिनतम।
हर मोड़ पर सिखाती हैं सबक नया,
चलते रहो, यही है इनका कहा।

राहें थकान भी देती हैं, उम्मीद भी,
अंधेरों में रोशनी की तसदीक भी।
जो ठहर गया, वो पीछे रह गया,
जो बढ़ता रहा, वही आगे बढ़ गया।

राहें मंज़िल से ज़्यादा प्यारी लगती हैं,
क्योंकि सफ़र में ही ज़िंदगी सजती है।
हर कदम पर कहानी बनती जाती है,
राहें ही 'साहिल' को पहचान दिलाती हैं।

प्रकृति का क्रोध

नदियाँ उफनती, पर्वत काँपते,
आकाश में बिजली के तीर बरसते।
धरती की गोद जब थरथराती, मानव की शक्ति क्षणभर में मिट जाती।

पेड़ों की जड़ें जब उखड़ने लगतीं,
समंदर की लहरें नगर निगलतीं।
हवा का झोंका जब तूफ़ान बन जाए, सभ्यता का गर्व पल में ढह जाए।

प्रकृति सहनशील, दयालु, विशाल,
पर अन्याय सहती नहीं हर बार।
जब लोभ से मानव सीमा लांघे, तो क्रोध बनकर प्रलय बरसाए।

'साहिल' का संदेश यही है हर आपदा का,
सम्मान करो इस धरा-माता का।
संतुलन रखो, स्नेह निभाओ, प्रकृति को अपना मित्र बनाओ।

आईना

आईना चुपचाप खड़ा रहता है, हर चेहरे की परतें पढ़ लेता है।
सच और झूठ का फर्क नहीं करता, बस जो सामने है, वही कहता है।

कभी मुस्कान लौटाता है, कभी आँसू भी दिखा जाता है।
चेहरे की थकान, आँखों की चमक, सब कुछ साफ़-साफ़ बता जाता है।

आईना न कोई सवाल करता है, न कोई जवाब देता है।
वह तो बस एक साथी है, जो हर दिन नया रूप देता है।

आईना सिखाता है-खुद से न भागो, खुद को पहचानो।
चेहरे के पीछे छिपे मन को थोड़ा और गहराई से जानो।

आईना टूट भी जाए तो हज़ार टुकड़ों में बिखर जाता है,
पर हर टुकड़ा फिर भी 'साहिल' का सच ही दिखलाता है।

मोहब्बत

मोहब्बत एक नर्म सी धड़कन है, जो दिल की गहराइयों में उतर जाती है।
ये वो खामोश मुस्कान है, जो बिना कहे सब कुछ कह जाती है।

मोहब्बत एक अधूरी ख्वाहिश भी है, और पूरी हुई दुआ भी।
ये वो सफर है, जहाँ मंज़िल से ज़्यादा रास्ते की अहमियत होती है।

मोहब्बत में वक्त ठहर जाता है, हर लम्हा एक कहानी बन जाता है।
ये वो एहसास है, जो आँखों से बहकर दिल तक पहुँच जाता है।

मोहब्बत कोई सौदा नहीं, ये तो बस एक अर्पण है।
जहाँ खुद को खोकर भी, इंसान खुद को पा लेता है।

मोहब्बत वो रौशनी है, जो अंधेरों में भी राह दिखा देती है।
ये वो दुआ है, जो हर दिल को 'साहिल' से मिला देती है।

ख्वाब

ख्वाब वो रंग हैं,
जो आँखों के कैनवास पर बिना ब्रश के उतर आते हैं।
ख्वाब वो रास्ते हैं,
जहाँ मंजिलें खुद चलकर दिल के दरवाज़े पर दस्तक देती हैं।

ख्वाब वो परिंदे हैं,
जो पिंजरे की सलाखों से भी आसमान नाप लेते हैं।
ख्वाब वो दीपक हैं,
जो अंधेरों में भी उम्मीद की लौ जलाए रखते हैं।

ख्वाब वो धड़कन हैं ,
जो थकान से टूटी साँसों को फिर से जीने का सबक देती हैं।
ख्वाब वो सच हैं ,
जो अभी अधूरे हैं, पर कल की सुबह उन्हें पूरा करने का 'साहिल' हौसला बन जाते हैं।

ख़ुशी

ख़ुशी कोई मंज़िल नहीं, ये तो एक सफ़र है,
छोटी-छोटी बातों में छुपा दिल का असल असर है।

सवेरे की ठंडी हवा में, बच्चों की मासूम हँसी में,
बरसात की पहली बूंद में, माँ के दुलार भरे स्पर्श में।

ख़ुशी है दोस्त का साथ, बिन कहे समझ जाना,
थके मन को सुकून देना, और आँसू को मुस्कान बनाना।

ये दौलत से नहीं मिलती, न ही शोहरत से जुड़ी है,
ख़ुशी तो दिल की वो धड़कन है, जो अपनों से जुड़ी है।

'साहिल' की ख़ुशी बाँटने से बढ़ती है, ये दिलों को जोड़ती है,
जहाँ प्यार और अपनापन हो, वहीं असली ख़ुशी मिलती है।

मशाल

अंधेरों की गहराइयों में, जब राहें खो जाती हैं,
एक लौ उठती है, साहस की सांसों से जलती है।

मशाल सिर्फ आग नहीं, यह उम्मीद का प्रतीक है,
थके कदमों को दिशा देती, भटके मन को संगीत है।

तूफानों से लड़ती हुई, बरसातों में भी जलती है,
मशाल बताती है-रोशनी कभी हारती नहीं।

यह हाथों से हाथों तक जाती, सपनों को जोड़ती है,
हर पीढ़ी को याद दिलाती, कि अंधेरा स्थायी नहीं होता।

मशाल है संघर्ष की गवाही, मशाल है विश्वास की निशानी,
जहाँ भी उठती है यह लौ, वहाँ जन्म लेती है 'साहिल' की नई कहानी।

परीक्षा

परीक्षा का मौसम आया, मन में हलचल छाया।
किताबों संग दिन-रात, सपनों में भी प्रश्न-पत्र हाथ।

पन्नों पर शब्दों की भीड़, यादों का चलता है पीड़।
कभी लगे सब याद हुआ, कभी मन घबराया हुआ।

घड़ी की टिक-टिक बढ़ाए डर, उत्तर लिखने की हो फिकर।
परिश्रम का फल मीठा होता, सच्चा प्रयास कभी न खोता ।

परीक्षा बस एक पड़ाव है, 'साहिल' के जीवन का सुंदर प्रभाव है।
हिम्मत रखो, मन मत हारो, ज्ञान की ज्योति संग आगे बढ़ो।

तलाश

तलाश है उस रोशनी की, जो अंधेरों के पार ले जाए,
तलाश है उस सुकून की, जो थके मन को सहलाए।

तलाश है उन सपनों की, जो आँखों में चमक जगाएँ,
तलाश है उस मंज़िल की, जहाँ कदम खुद-ब-खुद पहुँच जाएँ।

तलाश है उस सच्चाई की, जो झूठ के पर्दे हटाए,
तलाश है उस रिश्ते की, जो बिना कहे सब समझ जाए।

तलाश है उस मुस्कान की, जो दिल से दिल तक पहुँच जाए,
तलाश है उस जीवन की, जहाँ हर पल नया रंग दिखाए।

तलाश है, और रहेगी हमेशा, क्योंकि तलाश ही तो 'साहिल' का जीवन है,
हर खोज में छुपा है सफ़र, और सफ़र ही असली धन है।

वजूद

वजूद की तलाश में भटकते हैं कदम,
कभी आईनों में, कभी परछाइयों में।

सवाल उठते हैं-क्या हूँ मैं?
एक नाम, एक चेहरा, या बस सांसों का सिलसिला?

वजूद तो शायद उन लम्हों में है,
जहाँ दिल धड़कता है किसी और की मुस्कान से।

जहाँ खामोशी भी कह जाती है सब कुछ,
जहाँ दर्द भी एक पहचान बन जाता है।

वजूद कोई मंज़िल नहीं, ये तो सफ़र है-
हर गिरावट, हर उड़ान, हर अधूरी ख्वाहिश का बयान।

और शायद वजूद वही है,
जब दुनिया कहे कि 'साहिल' तेरे होने से फर्क पड़ता है।

वक्त

वक्त की रफ़्तार को कोई रोक नहीं सकता,
ये बहता दरिया है, जो थम नहीं सकता।

जो वक्त को समझे, वही जीवन जी लेता है,
जो इसे गंवा दे, पछतावे में ही रह जाता है।

वक्त सिखाता है धैर्य, वक्त देता है आस,
वक्त ही बनाता है इंसान को ख़ास।

न करो घमंड इस पर, न करो उपेक्षा,
वक्त का हर लम्हा है जीवन की परीक्षा।

संभाल लो इसे, तो किस्मत सँवर जाएगी,
गँवा दिया अगर, तो राह भटक जाएगी।

वक्त ही सबसे बड़ा शिक्षक है संसार में,
जो सीखा इसे, वही सफल है हर बार में।

'साहिल' कहता है खुशियाँ, कभी ग़म का पैग़ाम,
हर पल बदलता है, यही है इसका काम।

सिफ़त

सिफ़त है जैसे सुबह की रौशनी,
मन को छू ले, दे नई ज़िंदगी।
उसकी मुस्कान में है सुकून का रंग,
हर लम्हा बन जाए मीठा सा संग।

सिफ़त की बातें जैसे झरनों की धुन,
दिल को कर दें हल्का, मिटा दें ग़म-गुन ।
उसकी सोच में है गहराई का समंदर,
हर शब्द उसका लगे जैसे सुंदर।

सिफ़त है दुआओं का प्यारा असर,
हर दिल में छोड़ दे अपनापन का सफ़र ।
उसकी मौजूदगी है जैसे खुशबू का गीत,
हर ओर फैला दे मोहब्बत की प्रीत।

सिफ़त का नाम है उजाले की पहचान,
उससे ही खिलता है हर अरमान।
वो है दोस्ती, वो है अपनापन,
सिफ़त है 'साहिल' के जीवन का सबसे सुंदर दर्पण।

तासीर

हर चीज़ की होती है तासीर,
कभी ठंडी, कभी गर्म, कभी नमी से भरपूर।
जैसे मिट्टी की खुशबू बरसात में,
वैसे ही इंसान की फितरत उसके हालात में।

तासीर है धूप की, तपिश से जलाने वाली,
तासीर है चाँदनी की, दिल को सुकून दिलाने वाली।
तासीर है शब्दों की, कभी मरहम, कभी ज़हर,
तासीर है खामोशी की, जो कह दे सब कुछ बिन कहे।

फल की मिठास, जड़ी-बूटी की कड़वाहट,
हर स्वाद में छुपी है तासीर की आहट।
रिश्तों की भी होती है तासीर,
कभी अपनापन, कभी दूरी की लकीर।

तासीर है मौसम की, बदलते रंगों में,
तासीर है दिल की, धड़कते जज़्बातों में।
हर लम्हा, हर एहसास, हर चीज़ का असर,
तासीर ही तो है, जो बनाती है 'साहिल' के जीवन का सफ़र ।

नज़राना

नज़राने में क्या रखा है,
ये तो दिल की सच्चाई का आईना है।
सोने-चाँदी की चमक फीकी पड़ जाती,
जब भावनाओं का दीपक जल जाता है।

नज़राना वो नहीं जो बाज़ार से खरीदा जाए,
ये तो वो है जो आत्मा से दिया जाए।
कभी एक मुस्कान, कभी एक दुआ,
कभी चुपचाप बहती आँखों की नमी भी नज़राना है।

नज़राना फूलों का हो सकता है,
या शब्दों की कोमल छुअन का।
कभी हाथ थाम लेने का साहस,
कभी मौन में छिपे अपनापन का।

नज़राना छोटा हो या बड़ा,
उसका मोल नहीं आँका जा सकता।
क्योंकि असली नज़राना वही है,
जो दिल से दिल तक पहुँचता।

नज़राना सिर्फ़ वस्तु नहीं,
ये रिश्तों की डोर का गहना है।
जहाँ सच्चाई और प्रेम हो,
वहीं 'साहिल' का नज़राना सबसे अनमोल होता है।

सुंदरता

सुंदरता है एक मधुर मुस्कान,
जो अंधेरों में भी भर दे प्रकाश का गान।
यह केवल चेहरे की चमक नहीं,
बल्कि हृदय की गहराइयों की झलक है सही।

सुंदरता है दया की कोमल छाया,
जो हर दुखते मन को दे सुकून का साया।
यह आँखों की चमक से परे, आत्मा की निर्मलता में बसे।

सुंदरता है सादगी का श्रृंगार,
जो बिना बोले कह दे हजार विचार।
यह फूलों की खुशबू, नदियों की धार,
पर्वतों की ऊँचाई, आकाश का विस्तार।

सुंदरता है प्रेम का अहसास,
जो जोड़ दे दिलों को बिना किसी प्रयास।
यह हर जगह है, हर रूप में छिपी,
बस देखने वाली दृष्टि हो सच्ची।

सुंदरता है जीवन का संगीत,
जो हर पल को बना दे अनोखा और अतीत।
यह भीतर से बाहर तक बहती धारा,
जो बना दे 'साहिल' को सचमुच प्यारा।

आज़ादी

लहू से सींची धरती ने, स्वप्न स्वतंत्रता का बोया था।
बलिदानों की अग्नि में तपकर, भारत ने सूरज संजोया था।

जंजीरों को तोड़ दिया हमने, हिम्मत से इतिहास लिखा।
गुलामी की रात अंधेरी थी, पर सुबह ने उजियारा दिखा।

आज़ादी केवल शब्द नहीं है, ये कर्तव्य, संघर्ष, विश्वास है।
हर दिल में जोश जगाती है, ये भारत की पहचान खास है।

संविधान की शपथ दिलाती, समानता का दीप जलाती।
भाईचारे की राह दिखाती, न्याय की गंगा बहाती।

आओ मिलकर प्रण ये लें, देश का मान बढ़ाएँगे।
'साहिल' आज़ादी की इस अमानत को, सदैव सुरक्षित बनाएँगे।

कदम

कदम का पेड़ खड़ा है चुपचाप, धरती से जुड़ा, आकाश के पास।
हरी-भरी शाखों में जीवन का गीत, छाँव में मिलती है सुकून की प्रीत।

गर्मी की धूप में ठंडी छाँव, थके हुए मन को देता आराम।
पत्तों की सरसराहट में छिपा संदेश, धैर्य और स्थिरता का अनमोल उपदेश।

फूलों की खुशबू, रंगों की छटा, मन को भाती है इसकी सरलता।
पक्षियों का बसेरा, बच्चों का खेल, कदम के नीचे हर पल है मेल।

समय बदलता, ऋतु बदलती, पर कदम की छवि सदा अडिग रहती।
'साहिल' जीवन की राह में देता है ज्ञान, स्थिर रहो, बढ़ते रहो, यही है पहचान।

अदम्य साहस

तूफ़ानों से जो टकराए, अंधेरों में भी दीप जलाए।
गिरकर हर बार उठ खड़ा हो, पथरीली राहों पर भी बढ़ता चला हो।

साहस वही जो हार न माने, कठिनाइयों में भी मुस्कान सजाए।
जो पर्वत को भी ललकारे, और सागर की गहराई नापे।

अदम्य साहस है वो शक्ति, जो डर को भी बना दे भक्ति।
जो असंभव को संभव कर दे, और जीवन को उजियारा भर दे।

संघर्षों से 'साहिल' न घबराए, हर बाधा को अवसर बनाए।
वही है सच्चा वीर इंसान, जिसका साहस है अडिग, महान।

मैं बेबाक रहता था

अब मायूस-सा हो गया हूं,
न जाने कौन सा एक पड़ाव आया,
उसने मेरी खुशियां ही छीन ली,
अब यह लगता है, छोड़ दूं ये सारी दुनिया,
ये तमाम लोग और मंजिलें,
अब ये मेरे किस काम की।
खुश रहने वाला लड़का,
आज अपने लिए ही चिंतित हो गया है,
सोचता रहा कि सभी सुख और दुःख के साथी हैं,
लेकिन इस जिंदगी के सफर को अकेले ही पूरा करना पड़ता है।
इसका तो सिर्फ एक ही असूल है,
बेबाक और निडर रहो,
न ही इतने कष्ट हो।
फिर भी उनके लिए रब से दुआ ही मांगूंगा,
जिन्होंने मुझे इस क़दर बना दिया,
कि मैं अपने पैरों पर खड़ा हो सकूं,
उन्हें यह दिखा सकूं कि मैं भी कुछ कर सकता हूं।
इसलिए तो 'साहिल' क्या खूब लिखता है-
लोग आते जाते रहते हैं,
परवाह न करना अपनी जिंदगी अपने अनुसार जीना।

प्रकृति की अजेयता

ये कैसा आघात है,
कहीं बाढ़ तो कहीं बरसात है,
मानव खुद को समझकर अजेय,
प्रकृति को करने चला है विजय।
तुमने जगह जगह किया प्रकृति का दोहन,
अब तो प्रकृति करेगी अपनी शक्ति का प्रदर्शन।
प्रकृति ने तुम्हें किया जगह जगह पर अगाह,
पर तू माना नहीं।
अब देख ले किस तरह प्रकृति,
अपनी हानि का ले रही है बदला,
फिर भी तेरा स्वभाव नहीं बदला।
हर बार इससे मिली चेतावनी,
लेकिन इसके बावजूद भी तू नहीं माना।
जब तक प्रकृति का साथ तेरे साथ है,
तब तक तेरा जीवन है।
इसलिए ना कर प्रकृति का नाश,
नहीं तो यह कर देगी तेरा सर्वनाश।
कहता है 'साहिल' प्रकृति को करो प्रेम
और प्रकृति की दुनिया से करो रक्षेम।

जिंदगी की अहमियत

ये जिंदगी का कैसा इम्तिहान है,
कहीं पर मौत, तो कहीं पर दुःख और दर्द का फरमान है।
जिंदगी को जीना और काटना,
मानव का दस्तूर है।
हंसकर जियें या दुःख में काटें,
वो जिंदगी जीने का कहना है,
क्या लेकर आए थे,
क्या लेकर जाना है,
कारण तो सिर्फ जीने और मरने का बहाना है,
हर जगह पर जिंदगी का बहुत बड़ा इम्तिहान है,
कहीं रुलाना और कहीं हँसाना ,
इसका बड़ा योगदान है।
जिंदगी ज़ख़्मी है, मनुष्य घायल है,
बस अंतर इतना ही है,
हर पड़ाव पर जिंदगी-जीवन और 'साहिल' है।
हमें जिंदगी के साथ चलना भी है
और इसको अपने साथ चलाना भी है।

किस्मत और किरदार

तुम्हारे नयन मेरे लिए नीर हैं,
मेरे लफ़्ज़ों में इश्क के लिए बड़ी पीर है।
समय बीत जाता है तुम्हारे ख्यालों में,
तुम्हारा नज़राना मेरे जीवन का समीर है।
भूल गया था वक्त की तासीर को,
तुम्हारे साथ बिताया वो हर पल,
मेरी किस्मत की लकीर है।
परवाना बन गया हूं दुनिया का,
हर रिश्ते में बंधी ही नई तक़दीर है।
लेकिन आजकल अपने अपने ही न रह गये,
जब हमने दिल्लगी करना सीख लिया है,
अब तो दिल में एक ही बात आती है,
'साहिल' तुम्हारे इश्क का फकीर हो गया है।

जिंदगी की तस्वीर में

मैंने जिंदगी की राह में,
कई मुकाम देखें हैं।
उन मुकामों पर मैंने अपने कई नाम देखें हैं।
लोगों के चेहरे के आर पार,
खुद की कहानी देखी है।
उस कहानी में खुद की कहानी ही बदलती देखी है।
मैं जैसा हूं, उसके विपरीत,
उनके आइने में अपनी परछाई देखी है।
मैंने उनकी जिंदगी की राह में,
अपनी एक अलग राह देखी है।
क्योंकि मैंने उनकी नहीं, खुद से खुद के आईने में,
अपनी अलग पहचान देखी है।
मोहब्बत उसको मिलती है, जिसका नसीब होता है।
बहुत कम हाथों में ये मोहब्बत की लकीर होती है।
कभी कोई अपनी मोहब्बत से न बिछड़े,
कसम से ऐसे हालात में बहुत तकलीफ़ होती है।

इश्क की तबाही....

इश्क ने क्या खूब तबाही मचा रखी है,
आधी दुनिया पागल, तो आधी दुनिया शायर बना रखी है।
जब इश्क मिला तो ऐसा लगा,
क्या पता यह दिल में न उतर जाए,
हम समझते थे कि इश्क जख्म है, भर जायेगा,
हमें क्या ख़बर थी कि यह तो दिल में उतर जायेगा।
वादा करता हूं इस इश्क का इंतजार करूंगा,
लेकिन तुम्हारे आने का इंतजार करूंगा।
पल तुम्हारे जाने के बाद तुमसे ही इश्क करूंगा।
माना कि तुम्हारा इश्क मेरे जिंदगी के लिए नहीं है,
फिर भी तुम्हारे इश्क को पाने के लिए रब से दुआ करूंगा।
'साहिल' ने सही कहा है ---
अगर प्यार करेगा, तो बिखर जायेगा, बिखर जायेगा ।

किताब और प्रियतमा....

सोचता हूं कि तेरी अदा पर किताब लिखूं,
पर डर लगता है कि पढ़ने वाले दिवाने न हो जायें।
तुम्हारे साथ मिलने का इंतजार रहेगा,
फिर भी तुमसे न रहा जायेगा,
जब लगा कि दिल बस में नहीं है,
तो मालूम हुआ कि इश्क ने किसी को छोड़ा नहीं है,
फिर भी इसके लिए दिल में सुकून सा मिला है,
तुम्हारे होने का साहस सा मिला है,
तुम्हारे मिलने का सहसा ही अलग है,
तुम्हारी राह में खिला हर फूल सा मिलता है,
मेरे लफ़्ज़ों की दुआ मुकम्मल हो,
'साहिल' ने क्या खूब लिखा है,
क्या पता तुम्हारा दिल इश्क में न पड़ जाए,
सिफ़त ऐसी है कि लिखी हर बात शायरी न बन जाए।

हम पायेंगे कहां...

आपसे दूर होकर ,
हम जाएंगे कहां?
आप जैसा दोस्त,
हम पाएंगे कहां?
दिल को कैसे भी संभाल लेंगे,
पर आंखों के आंसू,
हम छिपाएंगे कहाँ?
जीवन तो फिर भी जी ही लेंगे,
पर आपसे मिली सीख,
हम पाएंगे कहां?
ख्वाबों के अंधेरे में पले हैं हम,
लेकिन प्यार का प्रकाश,
हम पाएंगे कहां?
टूट जाते हैं रिश्ते छोटी सी चोट से,
पर इनसे मिली पहचान,
हम पाएंगे कहां?

कमजोर लोग,
देश के युवाओं को शक्तिशाली,
बना पायेंगे कहां?
'साहिल' से खेलती हैं लहरें ,
दिल का पैगाम भिजवायेंगे कहाँ?

जीवन बाकी है...

मैं जब कुछ नई चीज सीखता हूं,
तो मेरा मन कहता है,
और सीखना अभी भी बाकी है।
हर पल ऐसा जियें कि,
लगे अभी भी जीवन जीना बाक़ी है।
जीवन तो हर कोई काटता है,
सोचें कि अभी भी पहचान बनानी बाकी है।
ज्ञान पाने के लिए किताब की जरूरत नहीं,
उसके लिए तो दुनिया ही काफी है।
लोग सिखाते हैं बोहोत कुछ,
उनको सिखाना अब भी बाकी है।
माता-पिता तो देते हैं साथ हर पल,
'साहिल' अब अपना फर्ज निभाना बाकी है।

बदलती रही...

कलम बदल गई, स्याही बदल गई,
बदल गए सब रंग भाई,
पेड़ों को काटकर, बनाये थे जो पन्ने,
उन पर लिख रहे भ्रष्टाचार के सिपाही,
वो परिवार रहे ना ,वो यार रहे,
ना रहे वो सगे भाई,
दर-दर पर कर रहे जीवन की भरपाई,
राजनीति की किताब में,
कहीं बची नहीं है, जीवन की अगुवाई,
नेताओं के पास रह गई है जनता की कमाई,
वो खान-पान रहा ना, ना रहे वो संस्कृति,
बदल गये सबके संसार,
रंग भी बेरंग हो गया,
जीवन जगत खेल हो गया, ना जी पायी ब्याही,
आज लड़कियां वस्तु हो गई,
रक्षक बन गए कसाई।
देखकर 'साहिल' दुनिया के सप्तरंग,
हो गया साहित्य के संग।

प्रकृति और दुनिया

बादल गीत गाते रहे,
बूंदे धुन बनातीं रही,
चकवा चकवी चकित हो गये, कुहासे कुठार एक हो गये,
आँखों के अश्रु अनेक हो गये।
बिजली धरती के लिए चमत्कार हो गई,
आंधी तूफान की जिंदगी में बहार हो गई,
आंखों से आंखें लड़ी, चार दिन की जिंदगी पार हो गई,
नदियों की जिंदगी में बहार हो गई।
आंखों के आंसू मोती बन गये,
हंसने रूलाने के बहाने अनेक हो गये,
जिंदगी अब किताबी हो गई,
सभी लोग कवि और लेखक बन गए।
महात्मा आदर्श चरित्र हो गए,
लोग अच्छे बनकर पवित्र हो गए,
दुनिया के विचार पाखंडों और अंधविश्वासों से घिर गए,
'साहिल' के विचार अपार हो गए।

वो कहती...

कहती है मेरे पास वक्त नहीं है,
तुम्हारे ऊपर खराब करने के लिए,
मैंने अपना वक्त बचाना सीख लिया है।
वो समय नहीं रहा,
जिसको बुरा माना जाता था,
लोगों ने इसको अपना गुलाम बनाना सीख लिया है।
आप और तुम में ये अंतर कर दिया है,
कि एक सम्मान है और एक दोस्त,
मैंने उस अंतर को दिखाना सीख लिया है।
कहती है अब वह दोस्त नहीं रहा,
मुझसे बात करने वाला,
जिस दोस्त की तस्वीर दिल में समाई है,
'साहिल' ने वो दोस्त मनाना सीख लिया है।

रिश्ते

रिश्ते वो धागे हैं, जो दिलों को जोड़ते हैं,
बिन कहे ही सब समझते, खामोशी में भी बोलते हैं।

कभी मुस्कान बन जाते, कभी आँसू पोंछ जाते,
तूफ़ानों में सहारा बन, सपनों को सच कर जाते।

रिश्ते सिर्फ खून से नहीं, एहसासों से भी बनते हैं,
छोटे-छोटे लम्हों में, जीवन को रंग भरते हैं।

इनकी डोर नाजुक होती, पर विश्वास से मज़बूत होती,
सच्चाई और अपनापन, हर दूरी को छोटा करती।

रिश्ते ही जीवन की पहचान, ये ही दिल का सम्मान,
इनके बिना 'साहिल' अधूरा, इनसे ही है संसार पूरा।

इम्तिहान

किताबों के पन्नों में छुपा, सपनों का एक संसार है।
कलम की नोक पे थमा हुआ, मेहनत का सारा भार है।

रातों की नींदें छिन जातीं, सवालों की गूंज सुनाई दे।
पन्नों पर उतरते अक्षर, जैसे उम्मीदें सजीव हो जाएं।

डर और हिम्मत की जंग में, दिल धड़कन से तेज़ धड़कता।
हर उत्तर में छुपा हुआ, भविष्य का एक रास्ता चमकता।

इम्तिहान सिर्फ़ परख नहीं, ये तो विश्वास की पहचान है।
मेहनत की हर बूंद से ही, सपनों का निर्माण है।

तो चलो मुस्कान के साथ लिखें, हर पन्ने पर अपनी कहानी।
क्योंकि इम्तिहान ही सिखाता है, 'साहिल' के जीवन की असली रवानी।

म्यान और तलवार

तलवार चमकती है तेज धार, साहस, शक्ति और अद्भुत भार।
लड़ाई में बनती है पहचान, न्याय की रखती है सच्ची जान।

म्यान है उसका शांत सहारा, संयम, धैर्य और प्रेम का प्यारा।
तलवार को थामे अपने भीतर, सिखाती है संतुलन हर क्षण पर।

तलवार बिना म्यान है बेकाबू, जैसे अग्नि हो बिना कोई रूप।
म्यान बिना तलवार अधूरी, दोनों मिलकर ही होती पूरी।

म्यान है धैर्य, तलवार है बल, दोनों का संग है जीवन का पल।
जहाँ हो संयम, वहाँ हो जीत, जहाँ हो संतुलन, वहीं है प्रीत।

म्यान और तलवार का मेल, सिखाता है जीवन का खेल।
शक्ति तभी है सच्ची और सार, जब हो संयम उसका आधार।

'साहिल' को माँ की गोद में मिलता प्रीत।
नन्हीं हँसी, मासूम सी बातें, नई सुबह की सुनहरी सौगातें।

साहिल और समंदर

साहिल पे आती लहरों की पुकार, कभी मधुर, कभी करती है हुंकार।
रेत पे लिखी हर इक कहानी, पल में मिटे, फिर बने निशानी।

साहिल है धैर्य का गहरा रूप, समेटे सागर का हर स्वरूप।
लहरें चाहे जितना उछलें, साहिल पर आकर ही थम लें।

कभी अकेलापन, कभी भीड़ का शोर, साहिल पे मिलता है मन को ठौर।
सपनों की नावें यहाँ तैरतीं, यादों की परछाइयाँ भी ठहरतीं।

साहिल है मिलन और जुदाई का गीत, लहरों संग करता है अनोखी प्रीत।
जीवन की राहों का देता सबक, हर अंत के बाद है नई झलक।

'साहिल' पे बैठा मन ये समझे, सागर की गहराई को परखे।
शांत किनारा, अनंत विस्तार, साहिल है जीवन का सुंदर विचार।

किताब

किताब है जैसे सागर गहरा, जिसमें छुपा है ज्ञान सुनहरा।
हर पन्ना एक नई कहानी, हर शब्द में बसी ज़िंदगानी।

कभी सिखाती सब्र का पाठ, कभी दिखाती सपनों का ठाठ।
कभी बनती है सच्चा साथी, अंधेरों में देती है ज्योति।

कभी उड़ाती कल्पनाओं में, कभी उतारती गहराइयों में।
कभी हँसाती, कभी रुलाती, कभी चुपचाप मन बहलाती।

किताब है जैसे मित्र पुराना, जिसमें मिलता हर ज़माना।
ज्ञान, अनुभव, भाव, विचार, सब समेटे इसका संसार।

किताब है 'साहिल' के जीवन की रोशनी, मन की प्यास बुझाने की धुनि।
जो पढ़ ले इसका हर अध्याय, वो पा ले जीवन का सच्चा साय।

मिसाल

मिसाल वो बनता है इंसान, जो छोड़ जाए अमिट पहचान।
कदमों के निशान जो राह दिखाएँ, अंधेरों में भी दीप जलाएँ।

मिसाल है साहस की उड़ान, जो तोड़ दे हर बंधन, हर जान।
मुश्किलों में भी जो डट जाए, सच की राह पे बढ़ता जाए।

मिसाल है त्याग का उजियारा, जो जग को दे प्रेम का सहारा।
अपनी खुशी भुलाकर भी, दूसरों का दर्द मिटा दे कभी।

मिसाल है मेहनत का गीत, जो साधारण को कर दे अतीत।
पसीने से जो सपने सींचे, वो इतिहास में नाम लिखे।

मिसाल वही, जो राह बनाए, खुद चले और जग को चलाए।
'साहिल' यही बतलाए, मिसाल बनो, औरों को दिखलाए।

जन्म और मृत्यु

जन्म है आशा का उजियारा, हर दिल में जगता है सहारा।
नई कहानी, नए सपनों का, आरंभ है यह जीवन राग का।

मृत्यु है जीवन का अंतिम पड़ाव, शांत समंदर, ठहरा बहाव।
थककर लौटती हर इक साँस, छोड़ जाती है यादों का आभास ।

मृत्यु है अंत नहीं, परिवर्तन, एक सफ़र से दूसरे का आरंभण।
जैसे ढलकर सूरज सो जाता, फिर नए सवेरे में लौट आता।

जन्म और मृत्यु हैं दो किनारे, बीच में बहते जीवन धारे।
एक शुरुआत, एक विराम, दोनों मिलकर रचते हैं धाम।

यही है सृष्टि का अनोखा खेल, जन्म और मृत्यु का अद्भुत मेल।
एक से खुलती 'साहिल' के जीवन की डोर, दूसरे से मिलता अनंत ठौर।

नदी और समुद्र

नदी है मासूमियत की धारा, पहाड़ों से उतरती प्यारा सहारा।
कल-कल करती, गुनगुनाती, धरती को जीवन से भर जाती।

समुद्र है गहराई का गीत, अनंत लहरों में छिपी प्रीत।
कभी शांत, कभी प्रचंड तूफ़ान, उसमें समाया है जग का मान।

नदी है यात्रा, खोज और राह, हर मोड़ पर देती नई चाह।
छोटे-छोटे कणों को संग लाती, हर दिल में उम्मीद जगाती।

समुद्र है मंज़िल का विस्तार, जहाँ थमता है हर बहाव का सार।
नदी का सपना, उसका अरमान, समुद्र में पाना अपना स्थान।

नदी और समुद्र का 'साहिल' संगम, है जीवन का अद्भुत क्रम।
एक बहती, एक समेटे संसार, दोनों मिलकर रचते प्यार।

किरदार और कहानी

किरदार चलते हैं राहों पर, कभी मुस्कान, कभी आहों पर।
कभी वीर बनकर जग जीतते, कभी हार में भी गीत लिखते।

कहानी बुनती है धागों से, सपनों, दुखों और भागों से।
कभी उजाला, कभी अंधेरा, कभी सवेरा, कभी सवेरा।

किरदार मिलते हैं मोड़ों पर, कभी किताबों, कभी तोड़ों पर।
उनकी आंखों में झलकती है, कहानी की धड़कन रुकती है।

कभी वो रोते, कभी हंसते, कभी गिरते, फिर भी बढ़ते।
कहानी देती है परवाज़, किरदार बनते हैं अंदाज़।

'साहिल' का हर किरदार है एक आईना, हर कहानी है एक ज़माना।
दोनों मिलकर रचते जादू, दिल से दिल तक पहुँचाते साधु।

अवसर और चुनौती

अवसर है जीवन का सुनहरा पल, जो बदल दे किस्मत का हर हलचल।
दरवाज़ा खटखटाए चुपचाप, जो पहचान ले, वही पाए आप।

चुनौती है राह का कठिन मोड़, जो परखे साहस, जोड़े जोड़।
गिरकर भी जो उठना सिखाए, संघर्ष से मंज़िल तक ले जाए।

अवसर है उम्मीद की किरण, जो अंधेरों में जगाए जीवन।
सपनों को सच करने का आधार, अवसर ही देता है नया आकार।

चुनौती है शक्ति का प्रमाण, जो दिखाती है इंसान का मान।
धैर्य और हिम्मत का संगम यही, चुनौती से खिलती है जीत सही।

अवसर और चुनौती का मेल, है जीवन का अनोखा खेल।
'साहिल' इन्हें अपनाए दिल से हर बार, वही बनाता है भविष्य शानदार।

सफलता और सफ़र

सफ़र है संघर्ष की लंबी राह, जहाँ हर कदम सिखाता है चाह।
कभी धूप, कभी छाँव का संग, यही सफ़र बनाता है जीवन रंग।

सफलता है उस सफ़र का मुकाम, जहाँ मिलते हैं सपनों के नाम।
पसीने की हर बूँद का मान, सफलता में मिलता है पहचान।

सफ़र है धैर्य का इम्तिहान, जो दिखाता है साहस का मान।
गिरकर भी जो उठते जाएँ, वही मंज़िल तक पहुँच पाएँ।

सफलता है मेहनत का फल, जो बदल दे जीवन का पल।
न कोई शॉर्टकट, न कोई छल, सच्चे प्रयास से ही मिलता है बल।

सफ़र और सफलता का मेल, है जीवन का अनोखा खेल।
सफ़र को अपनाओ, रखो विश्वास, सफलता खुद आएगी 'साहिल' के पास।

महक

महक है फूलों की मुस्कान, जो भर दे जीवन में जान।
न दिखे आँखों से पर छू ले मन, महक है खुशियों का मधुर स्पंदन।

महक है यादों की परछाई, जो लहरों संग लौट आए भाई।
कभी बचपन, कभी प्यार का गीत, महक से जुड़ते हैं अनगिनीत।

महक है रिश्तों की मिठास, जो जोड़ दे दिल से हर एहसास।
नफ़रत को मिटाकर प्रेम जगाए, महक से जीवन महक उठ जाए।

महक है उम्मीद का उजियारा, जो अंधेरों में दे सहारा।
जहाँ हो महक, वहाँ हो सुकून, वहीं खिलता है जीवन का जूनून।

महक है प्रकृति का उपहार, जो बना दे हर पल ख़ास।
महक से ही सजता है 'साहिल' का संसार, महक ही जीवन का सच्चा श्रृंगार।

जागीर

जागीर है मेहनत का प्रतिफल, जो बनाती है जीवन को सफल।
न सोने-चाँदी, न धन-दौलत मात्र, जागीर है कर्मों का सच्चा पात्र।

जागीर है ज्ञान की थाती, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती जाती।
न लुटे, न घटे, न हो बर्बाद, ज्ञान की जागीर है सबसे आबाद।

जागीर है रिश्तों का मान, प्यार से सजता है इसका जहान।
जहाँ हो अपनापन और विश्वास, वहीं खिलती है जीवन की आस।

जागीर है सपनों की उड़ान, जो देती है हिम्मत और पहचान।
संघर्षों से जो मिलती है जीत, वही जागीर है सच्ची प्रीत।

जागीर है इंसानियत का सार, जो कर दे जीवन को खूबसवार।
धन-दौलत सब रह जाएँ पीछे, जागीर है अच्छाई जो सदा सींचे।

जागीर है मेहनत का प्रतिफल, जो बनाती है जीवन को सफल।
न सोने-चाँदी, न धन-दौलत मात्र, जागीर है कर्मों का सच्चा पात्र।

जागीर है ज्ञान की थाती, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती जाती।
न लुटे, न घटे, न हो बर्बाद, 'साहिल' के ज्ञान की जागीर है सबसे आबाद।

मददगार

मददगार है जीवन की रोशनी, जो बाँट दे हर दिल में खुशबू सुहानी।
कठिन घड़ी में थामे जो हाथ, वही बनता है सच्चा साथ।

मददगार है उम्मीद का दीप, जो अंधेरों में दिखाए नसीब।
गिरते को थामे, रोते को हँसाए, भटके को राह सही बतलाए।

मददगार है इंसानियत की पहचान, जो जोड़ दे दिल से दिल का मान।
न कोई स्वार्थ, न कोई अभिमान, बस सेवा ही उसका अरमान।

मददगार है दुआओं का रंग, जो बाँध दे सबको एक संग।
जहाँ हो मददगार का साथ, वहीं खिलता है जीवन का नाथ।

मददगार है सच्चाई की जीत, जो बना दे 'साहिल' के रिश्तों में प्रीत।
उसकी छाया में मिलता सहारा, वही है दुनिया का सबसे प्यारा।

कलाकार और कला

कलाकार है भावों का चित्रकार, जो शब्दों से रच दे संसार।
कभी रंगों में, कभी सुरों में, कभी मिट्टी, कभी अक्षरों में।

कला है आत्मा की गहराई, जो दिखा दे अनकही सच्चाई।
न कोई भाषा, न कोई दीवार, कला जोड़ती है हर दिल बार-बार।

कलाकार है सपनों का दूत, जो साधारण को बना दे अनूठ।
दर्द को गीत, आँसू को मुस्कान, कला से देता है जीवन को मान।

कला है समय की अमर पहचान, जो छोड़ जाए अमिट निशान ।
कलाकार के संग खिलती है कली, जो बना दे दुनिया को और भी भली।

कलाकार और कला का संगम,
है 'साहिल' के सृजन का सबसे सुंदर क्रम।
जहाँ हो कल्पना, जहाँ हो विचार, वहीं जन्म लेता है सच्चा आकार।

उड़ान

उड़ान है सपनों का आकाश, जहाँ खुलते हैं उम्मीद के पंख खास।
बंधन तोड़, डर को हराए, नई दिशाओं में राह बनाए।

उड़ान है हिम्मत का प्रतीक, जो बना दे हर इंसान अद्वितीय।
गिरकर भी जो उठना सिखाए, असंभव को संभव बन जाए।

उड़ान है आज़ादी का गीत, मन को देती है अनोखी प्रीत।
सीमाओं से परे ले जाए, अनंत क्षितिज तक पहुँचाए।

उड़ान है विश्वास की पहचान, जो दिखाती है जीवन का मान।
जहाँ हो सपनों का सच्चा साथ, वहीं खुलते हैं सफलता के द्वार।

उड़ान है जीवन की सबसे बड़ी जीत, जो जोड़ती है साहस और प्रीत।
हर दिल में जगाती अरमान, यही है 'साहिल' के जीवन की सच्ची उड़ान ।

मुकाम

मुकाम है सपनों की मंज़िल, जहाँ थमता है सफ़र का सिलसिल।
राह कठिन हो, चाहे हो लंबी, मुकाम पे मिलती है जीत की चमक गहरी।

मुकाम है मेहनत का प्रतिफल, संघर्षों का सबसे सुंदर पल।
पसीने की हर बूँद का मान, मुकाम पे मिलता है पहचान।

मुकाम है हौसलों की उड़ान, जो लिखता है जीवन का गान।
गिरकर भी जो चलते जाएँ, मुकाम वही हासिल कर पाएँ।

मुकाम है विश्वास की जीत, जहाँ मिलती है सच्ची प्रीत।
जो थामे धैर्य और उम्मीद, वही पाता है मुकाम अद्वितीय।

मुकाम है जीवन का सार, जहाँ खुलते हैं नए द्वार।
'साहिल' की हर कोशिश का यही पैग़ाम, चलते रहो, मिलेगा मुकाम।

मझधार

मझधार है जीवन की कसौटी, जहाँ परखती है हर छोटी-बड़ी मोटी।
न किनारा पास, न राह साफ़, बस लहरों का शोर और मन का विलाप।

मझधार में डगमगाती नाव, सिखाती है साहस का भाव।
जो थाम ले हिम्मत की पतवार, वही पहुँचता है पार अपार।

मझधार है संघर्ष की पहचान, जहाँ टूटते हैं कई अरमान ।
पर जो रखे विश्वास अडिग, वो पा लेता है मंज़िल सही।

मझधार है धैर्य की परीक्षा, जहाँ मिलता है अनुभव का दीक्षा।
गिरकर भी जो उठना जाने, वही जीवन का सार पहचाने।

मझधार सिखाती है यही बात, न हार मानो, रखो विश्वास।
हर तूफ़ान के बाद है किनारा, 'साहिल' पर अंधेरे के बाद उजियारा।

भंवर और पतवार

भंवर है जीवन की कठिनाई, घेर ले जब राह में गहराई।
खींचे नीचे, डर दिखलाए, सपनों की नाव डगमगाए।

पतवार है उम्मीद का सहारा, अंधेरों में रोशनी का इशारा।
हाथों में थामो तो राह बने, हर मुश्किल में भी चाह जगे।

भंवर सिखाता धैर्य का मोल, संघर्ष से ही मिलता है गोल।
पतवार दिखाती साहस की राह, जो पार कराए हर एक चाह।

भंवर और पतवार का मेल, जीवन का है अनोखा खेल।
जहाँ हो संघर्ष, वहाँ हो जीत, जहाँ हो हिम्मत, वहीं है प्रीत।

भंवर गिराए, पतवार उठाए, जीवन को मंज़िल तक पहुँचाए।
'साहिल' का संदेश यही है गहरा और साफ़, हिम्मत से जीना ही है असली लाफ़।

कोशिश

कोशिश है जीवन की सच्ची पहचान, जो बना दे इंसान को महान।
गिरकर भी जो उठना सिखाए, अंधेरों में उजियारा दिखाए।

कोशिश है सपनों की उड़ान, जो तोड़ दे हर बंधन, हर जंजाल।
राह कठिन हो, चाहे हो लंबी, कोशिश से मंज़िल होती है नज़दीक।

कोशिश है साहस का आधार, जो मिटा दे हर डर, हर भार।
हार को जीत में बदल दे यही, असंभव को संभव कर दे यही।

कोशिश है विश्वास की डोर, जो जोड़ दे मन से हर ठौर।
जहाँ हो कोशिश, वहाँ हो जीत, वहीं खिलती है जीवन की प्रीत।

'साहिल' की कोशिश का संदेश है यही, रुकना नहीं, थकना नहीं।
हर कदम पर बढ़ते जाना, मंज़िल को अपना बनाना।

समाज

समाज है रिश्तों की डोर, जहाँ हर दिल पाता है ठौर।
कभी हँसी, कभी संघर्ष की राह, यही बनाता जीवन का प्रवाह।

समाज है मिलन का संगम, जहां जुड़ते हैं मन और कर्म।
हर इंसान का इसमें है स्थान, छोटा-बड़ा सबका समान।

समाज है सेवा का आधार, जहाँ बँटता है सुख-दुख हर बार।
कभी सहारा, कभी प्रेरणा, यही है जीवन की साधना।

समाज है आईना इंसान का, रूप दिखाता हर अरमान का।
जैसा बोओगे वैसा पाओगे, समाज में वैसा ही रंग सजाओगे।

समाज है शक्ति, समाज है मान,
यही है संस्कृति, यही है 'साहिल' की पहचान।
अगर हो एकता, प्रेम का साथ,
तो जगमगाएगा हर एक गाँव और शहर का माथ।

खुदा

खुदा है रोशनी का समंदर, हर दिल में बसता है अंदर।
न दिखे आँखों से पर हर जगह, उसकी मौजूदगी है सदा।

खुदा है दुआओं की तासीर, दुख में सुकून, खुशी में नज़ीर।
गिरते को थामे, रोते को हँसाए, भटके को राह सही दिखाए।

खुदा है इंसाफ़ का पैग़ाम, सच और नेकी उसका नाम।
नफ़रत को मिटाकर प्रेम सिखाए, हर दिल में इंसानियत जगाए।

खुदा है उम्मीद का उजियारा, अंधेरों में देता सहारा।
जो उसको दिल से पुकारे, वो राहें आसान कर डाले।

खुदा है मौन, खुदा है स्वर, खुदा है पास, न कहीं परे।
हर साँस में उसका एहसास, खुदा ही जीवन,
खुदा ही 'साहिल' का विश्वास।

बहन का प्यार

बहन का प्यार है सबसे निराला, जैसे जीवन में हो उजियाला।
उसकी हँसी है खुशियों का गीत, उसकी बातें हैं दिल का मीत।

बहन का प्यार है सच्चा सहारा, हर दुख-सुख में साथ हमारा।
वो है बचपन की सबसे प्यारी याद, जिससे सजता है जीवन का हर बाद।

बहन का प्यार है ममता की छाँव, उससे ही मिलता है अपनापन ठाँव।
वो है दोस्त, वो है रहनुमा, उससे ही जीवन है महकता सदा।

बहन का प्यार है अनमोल खज़ाना, जिससे जगमगाता है हर ज़माना।
उसके बिना अधूरा है संसार, बहन का रिश्ता है सबसे ख़ास उपहार।

बहन का प्यार है ईश्वर की देन, जो हर रिश्ते को करती है पूर्ण और क्षेम।
वो है जीवन की सबसे सुंदर पहचान, 'साहिल' की बहन का प्यार है सदा
महान।

जुबान और जज्बात

मेरी जुबान तुम्हारे मामले में कुछ कहती है,
तो जज्बात अपनी अलग गाते हैं,
जुबान से निकले लफ़्ज़,
कभी फूल बन जाते हैं,
कभी तीर की तरह चुभ कर,
दिलों को घायल कर देते हैं।

जज्बात की गहराई,
बयां करना आसान नहीं है,
कभी खामोशी ही कह देती है,
जो जुबान कह नहीं पाती कहीं।

जुबान से रिश्ते बनते हैं,
जुबान से ही बिगड़ जाते हैं।
मीठे बोल से दिल जीत लो,
कड़वे बोल से लोग बिखर जाते हैं।

जज्बात वो समंदर है,
जिसमें हर रंग समाया है।
खुशी, गम, मोहब्बत और तन्हाई,

सबने अपना घर बनाया है।
जुबान और जज्बात का रिश्ता,
नाजुक धागे जैसा है,
एक संभालकर चलो तो रोशनी,
वरन् अंधेरा ही वैसा है।

जुबान सिर्फ बोलने का जरिया नहीं,
ये इंसान की पहचान है,
सलीके से कही बात इबादत बन जाती है।

इसलिए जुबान को सजाओ,
जज्बात को समझो गहराई।
क्योंकि 'साहिल' की पहचान है,
उसके बोल और सच्चाई।

मेरे लफ़्ज़ों की गूंज

मेरे लफ़्ज़ों की गूंज दीवारों से टकराकर लौट आती है,
जैसे कोई अनकहा राज़ ख़ामोशी में अपना घर ढूँढता हो।

हर शब्द, हर सांस एक धड़कन की तरह गूंजता है,
दिल की गहराइयों से निकलकर फिर उसी दिल में समा जाता है।

ये गूंज कभी सुकून देती है, कभी सवालों की तरह चुभती है,
कभी दुआ बनकर फैल जाती है, कभी आंसुओं में ढल जाती है।

मेरे लफ़्ज़ों की गूंज सिर्फ़ आवाज़ नहीं, एक आईना है-
जिसमें मैं खुद को बार-बार देखता हूँ, और हर बार नया चेहरा पाता हूँ।

ये गूंज 'साहिल' को याद दिलाती है कि लफ़्ज़ सिर्फ़ कहे नहीं जाते, वे जीते हैं, सांस लेते हैं, और लौटकर हमें ही सुनाते हैं हमारी अपनी ही कहानी।

चरित्र

चरित्र ही है जीवन का आधार, जिससे मिलता है सच्चा सम्मान।
धन-दौलत सब क्षणभंगुर है, चरित्र ही देता अमर पहचान।

सत्य और ईमानदारी की राह, बनाती है जीवन को उज्ज्वल प्रवाह।
झूठ और छल से जो बचता है, वही सच्चे सुख को रचता है।

चरित्र से ही होती है पहचान, यह है आत्मा का सच्चा गान।
कर्म और वाणी में जो पवित्रता लाए, वही समाज में आदर्श कहलाए।

संकट में भी जो न डगमगाए, सत्य के दीप को जो जलाए।
वही है सच्चा वीर महान, चरित्र से ही होता उसका सम्मान।

चरित्र है जीवन का दर्पण, यह दिखाता है आत्मा का स्पंदन।
धन, वैभव सब क्षणिक माया, 'साहिल' चरित्र ही है अमर काया।

मामा के घर

मामा का घर है खुशियों का ठिकाना, जहाँ हर कोना लगता है सुहाना।
बचपन की यादें बसती हैं हैं वहाँ, हँसी-ठिठोली की गूँज है जहाँ।

मामा का घर है अपनापन की छांव, जहाँ मिलता है स्नेह का ठाँव।
मामी के हाथों का स्वाद भरा भोजन, मामा की बातें जैसे मधुर वचन।

मामा का घर है त्योहारों की रौनक, जहां मिलते हैं रिश्तों के अनगिनत
रंग। खेल-खिलौनों से सजा आँगन प्यारा, हर दिन लगता है उत्सव हमारा।

मामा का घर है बचपन की निशानी, जहाँ मिलती है हँसी और कहानी।
वो घर है रिश्तों का गहरा आधार, मामा का घर है सबसे ख़ास उपहार।

मामा का घर है स्नेह की डोरी, जहाँ हर याद बनती है प्यारी कहानी।
वो घर है 'साहिल' के दिल के सबसे पास, मामा का घर है सचमुच ख़ास।

दादा और दादी

दादा-दादी हैं घर की शान, उनसे सजता है जीवन का जहान।
उनकी बातें हैं अनुभव का खज़ाना, उनकी मुस्कान है स्नेह का तराना।

दादा है जैसे छाँव भरा पेड़, जो हर मुश्किल में देते हैं भेद।
उनकी सीख है जीवन का दीप, उनका साथ है सबसे अतीव ।

दादी हैं ममता की प्यारी छाया, उनसे ही घर-आंगन महकाया।
उनकी कहानियाँ हैं सपनों का संसार, उनकी गोद है सुकून का आधार।

दादा-दादी का प्यार है अनमोल, उनसे मिलता है जीवन का गोल।
उनकी दुआएं हैं सबसे बड़ी दौलत, उनका आशीर्वाद है सच्ची नियामत।

दादा-दादी हैं रिश्तों की डोर, उनसे जुड़ता है परिवार का छोर।
उनके बिना अधूरा है हर घर, दादा-दादी हैं 'साहिल' के जीवन का अमर स्वर।

बुढ़ापा है जीवन का अंतिम पड़ाव,
जहाँ आत्मा खोजती है सच्चा ठिकाना।
यह अंत नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत,
जहाँ मिलेगी 'साहिल' को शांति और प्रभु की सौगात।

बुढ़ापा

बुढ़ापा है जीवन की अंतिम राह,
जहाँ थमता है हर कदम की चाह।
चेहरे पर झुर्रियां, आंखों में धुंधलापन,
पर दिल में छुपा रहता है अनुभव का दर्पण।

बुढ़ापा है यादों का अनमोल खजाना,
जिसमें सिमटा है हर सुख-दुख का तराना।
बचपन की किलकारियां, जवानी की उड़ान,
सब समेटे चलता है जीवन का गान।

बुढ़ापा है धैर्य और शांति का रूप,
जहाँ मिलता है जीवन का सच्चा स्वरूप।
यह सिखाता है समय का मूल्य,
और दिखाता है प्रेम का असली मूल ।

बुढ़ापा है थकान और विश्राम का पल,
जहाँ मन चाहता है बस अपनापन सरल।
संतान का स्नेह, परिवार का साथ,
यही है बुढ़ापे की सबसे बड़ी बात।

आग और पानी

आग और पानी है जीवन के रंग, दोनों में छुपे हैं अनगिनत ढंग।
एक जलाता है, एक बुझाता है, एक विनाश, एक जीवन लाता है।

आग है जोश, हिम्मत और बल, पानी है शांति, सुकून का पल।
आग से मिलता है साहस का प्रकाश, पानी से मिलता है धैर्य का विश्वास।

आग है तपन, संघर्ष की पहचान, पानी है ठंडक, सुकून का गान।
दोनों मिलकर सिखाते हैं यही, संतुलन में ही छुपी है राह सही।

आग और पानी हैं विरोधी सही, पर जीवन में दोनों की ज़रूरत रही।
जहाँ आग है ऊर्जा, पानी है प्राण, दोनों से ही चलता है जग का विधान।

आग और पानी का संगम है जीवन, इनसे ही बनता है सृष्टि का दर्पण।
एक बिना दूजा अधूरा है यहाँ, दोनों से ही 'साहिल' का जगत पूरा है जहाँ।

शहर और गाँव

शहर है रोशनी का मेला, भाग-दौड़ का अनोखा झमेला।
ऊँची इमारतें, चमकते बाज़ार, पर दिल में रहता है थोड़ा सा भार।

गाँव है मिट्टी की खुशबू प्यारी, हरियाली से सजी क्यारी-क्यारी।
खेत-खलिहान, पगडंडी की राह, सादगी में छुपा है जीवन का गान।

शहर में सपनों की उड़ान बड़ी, पर रिश्तों में दूरी की दीवार खड़ी।
गाँव में अपनापन हर दिल में बसता, हर चेहरा मुस्कान से सदा ही हँसता।

शहर देता है अवसर और काम, गाँव सिखाता है धरती का मान।
दोनों ही जीवन के हैं दो पहलू, एक है तेज़, दूसरा है सरल और ठेठ ।

शहर और गाँव का संगम हो जाए, तो जीवन में सच्चा सुख आ जाए।
जहां आधुनिकता और परंपरा मिलें, वहीं 'साहिल' के जीवन के असली
रंग खिलें।

समझ

समझ है मन का गहरा प्रकाश, जो मिटा दे अज्ञान का त्रास।
शब्दों से आगे, भावों के पार, समझ ही जोड़ती दिलों का संसार।

समझ है धैर्य का मधुर गीत, जो बना दे रिश्तों को अतीत।
न कोई तकरार, न कोई भ्रम, जहाँ हो समझ, वहीं हो करम।

समझ है सच्चाई की पहचान, जो दिखा दे जीवन का मान।
कभी सिखाए चुप रह जाना, कभी सिखाए सच बतलाना।

समझ है प्रेम का गहरा रंग, जो बाँध दे सबको एक संग।
जहाँ हो समझ, वहाँ हो शांति, वहीं खिलती है जीवन की कांति।

समझ है 'साहिल' के जीवन की सबसे बड़ी जीत,
जो बना दे हर कठिनाई को प्रीत।
जिसके पास हो समझ का साथ, उसके लिए खुलते हर राह।

बेटी की अहमियत

बेटी है जीवन की सबसे प्यारी धुन,
घर आँगन में भरती है मधुर गुनगुन।
उसकी हँसी है जैसे फूलों की महक,
उसकी बातें हैं जैसे चाँदनी की चमक।

बेटी है दुआओं का साकार रूप,
ईश्वर का दिया सबसे सुंदर स्वरूप।
वो है ममता, वो है करुणा की छाया,
उससे ही घर-आँगन में सुख समाया।

बेटी है विश्वास और उम्मीद की डोर,
जो जोड़ती है रिश्तों का हर छोर।
वो है त्याग, समर्पण और प्यार,
उससे ही जग में होता उजियार।

बेटी है भविष्य की सुनहरी पहचान,
उससे ही सजता है जीवन का जहान।
वो है शक्ति, वो है प्रेरणा का गीत,
उससे ही मिलता है जीवन का मीत।

कहता है 'साहिल'-
बेटी की अहमियत है अनमोल ख़ज़ाना,
उसके बिना अधूरा है हर ज़माना।
जहाँ बेटी का सम्मान किया जाए,
वहीं सच्चे सुख के दीप जल जाएँ।

युवा

युवा है उमंगों का सागर, सपनों से भरा हुआ गागर।
आँखों में चमक, दिल में जोश, हर मुश्किल को करने का होश।

युवा है शक्ति, युवा है आस, बदल सके जो हर इतिहास।
मेहनत से जो राह बनाए, अंधेरों में भी दीप जलाए।

युवा है साहस की पहचान, नव निर्माण का सच्चा मान।
जो गिरकर भी उठना जाने, संघर्षों में मुस्काना जाने।

युवा है भविष्य का उजियारा, देश का गौरव, जग का सहारा।
उसकी लगन, उसकी उड़ान, बदल दे दुनिया, लिखे नया गान।

युवा है जीवन का उत्सव,हर धड़कन में छुपा है नव।
जहाँ हो गई 'साहिल' जैसा युवा, वहाँ हो प्रकाश, वहीं से शुरू हो हर
विकास।

प्रिय और प्रकृति

प्रिय है जैसे सुबह की किरण, जो मिटा दे मन का हर भ्रम।
उसकी मुस्कान है फूलों की तरह, जो महकाती है जीवन की राह।

प्रकृति है जैसे उसका रूप, निर्मल, कोमल और अनुपम स्वरूप।
नदी की धारा-सी उसकी वाणी, पवन की सरगम-सी उसकी कहानी।

प्रिय की आँखें हैं गगन के तारे, जो चमकते हैं हर पल हमारे।
प्रकृति की गोद-सी उसकी छाया, जिसमें मिलता है सुकून का साया।

प्रिय और प्रकृति दोनों हैं एक, सच्चाई, सुंदरता और प्रेम का लेख।
एक दिल में बसती, एक जग में, दोनों ही जीवन के मधुर राग में।

प्रिय है प्रकृति, प्रकृति है प्रिय,
दोनों से ही 'साहिल' का जीवन है हृदयमय।
जहाँ प्रेम और हरियाली मिल जाएँ, वहीं सच्चे सुख के दीप जल जाएँ।

साहिल और समीक्षा

साहिल है जैसे सागर का किनारा, जो थाम ले लहरों का हर इशारा।
स्थिर, शांत और गहरा उसका रूप, हर तूफ़ान में भी अडिग स्वरूप।

समीक्षा है जैसे मन की धारा, जो खोजे हर बात का सहारा।
सच और असत्य को परखती सदा, ज्ञान की ज्योति से जगमगाती दिशा।

साहिल और समीक्षा जब मिलते हैं, जीवन के अर्थ नए खिलते हैं।
एक देता है ठहराव का संदेश, दूसरी दिखाती है सच्चाई का परिवेश।

साहिल है धैर्य, समीक्षा है बुद्धि, दोनों से बनती है जीवन की सिद्धि।
जहाँ साहिल का सुकून और समीक्षा का विचार, वहीं मिलता है जीवन का सच्चा आधार।

'साहिल' और समीक्षा हैं दो दीप समान, जो जगमगाते हैं जीवन का जहान। एक है स्थिरता, एक है दृष्टि, दोनों से ही मिलती है सच्ची सृष्टि।

बचपन का नाम

बचपन का नाम है मासूम हँसी, नन्हीं शरारतें और प्यारी खुशी।
खेल-खिलौनों की रंगीन दुनिया, सपनों से भरी हुई छोटी काया।

बचपन का नाम है निश्चल प्यार, मां की गोद और पिता का दुलार।
न कोई चिंता, न कोई सवाल, बस हर दिन होता उत्सव सा हाल।

बचपन का नाम है किलकारियाँ, बारिश में भीगती छोटी क्यारियाँ।
मिट्टी में खेलना, तितली पकड़ना, हर पल को जीना, हर रंग को गढ़ना।

बचपन का नाम है मीठी यादें, जो जीवन भर देतीं सुख की सौगातें।
वो नन्हीं आँखों का सपनों का जहान, बचपन है जीवन का सबसे सुंदर गान।

बचपन का नाम है सच्चाई का रूप, निर्मल हृदय और उज्ज्वल स्वरूप।
वो समय लौटकर आता नहीं, पर 'साहिल' की यादों में सदा मुस्कुराता वही।

पहचान

पहचान है मन की सच्ची झलक, जो दिखाती है आत्मा की चमक।
न नाम से, न वेशभूषा से, पहचान होती है कर्म और सच्चाई से।

पहचान है अपने विचारों का रंग, जो बनाता है जीवन को को अनोखा संग। यह नहीं कि लोग क्या कहते हैं, बल्कि यह कि हम क्या रहते हैं।

पहचान है संघर्ष की राह, गिरकर भी उठने की चाह।
हर कठिनाई में जो अडिग खड़ा, वही है पहचान का सच्चा धड़ा।

पहचान है सच्चाई का दीप, जो अंधेरों में भी रहता अतीव ।
यह न समय से मिटती है, न हालात से, पहचान बनती है अपने जज़्बात से।

पहचान है 'साहिल' का असली रूप, जो देता है जीवन को गहरा स्वरूप।
दुनिया चाहे कुछ भी कह जाए, सच्ची पहचान कर्मों से ही बन पाए।

मेरी प्रिय दोस्त

मेरी प्रिय दोस्त है जीवन की रोशनी,
हर अंधेरे में देती है सच्ची संगिनी।
उसकी हँसी है जैसे फूलों की महक,
उसकी बातें हैं जैसे मीठी सरगम की झलक।

मेरी प्रिय दोस्त है विश्वास का आधार,
हर मुश्किल में बनती है सहारा अपार।
ग़म हो या खुशी, वो साथ निभाती,
दिल की हर धड़कन को समझ जाती।

मेरी प्रिय दोस्त है दर्पण की तरह,
सच दिखाती है हर राह पर सदा।
उसकी नज़र में छल नहीं होता,
उसका स्नेह कभी कम नहीं होता।

'साहिल' की प्रिय दोस्त है रंगों की उड़ान,
उससे सजता है जीवन का जहान।
वो है दुआओं का सबसे सुंदर रूप,
जिससे मिलता है अपनापन अनूप।

मेरी प्रिय दोस्त है अनमोल खज़ाना,
जिससे जगमगाता है हर ज़माना।
उसके बिना अधूरा है सफ़र,
वो ही है जीवन का सबसे सुंदर असर ।

दुख का वह समय

वो समय था जैसे अंधेरी रात, जहाँ न था कोई तारा, न कोई साथ।
हर ओर सन्नाटा, हर ओर पीड़ा, मन में उमड़ता था दुख का झरना गहरा।

आँखों में आँसू, होंठों पर मौन, दिल में बसा था बस टूटा हुआ कौन।
हर सपना जैसे बिखर गया था, हर विश्वास जैसे मर गया था।

वो समय था जब हँसी भी रूठ गई, खुशियों की राहें सब छूट गईं।
हर पल लगता था भारी बोझ, जैसे जीवन हो केवल एक खोज।

पर उसी दुख ने सिखाया मुझे, कैसे अंधेरों में ढूँढें उजाले को सच्चे।
कैसे गिरकर भी उठना है फिर, कैसे आँसुओं से बनती है तस्वीर।

'साहिल' का वो समय भले ही कठिन था बहुत, पर उसने दिया साहस का अमृत।
दुख के बाद ही समझ आया यही, जीवन का हर पल अनमोल है सही।

मेरी प्रियतमा

मेरी प्रियतमा है चाँद की चाँदनी, मन की गहराई में बसी एक रागिनी।
उसकी मुस्कान है फूलों की खुशबू, जो हर पल जीवन में भर दे जादू।

मेरी प्रियतमा है सुबह की किरण, जो मिटा दे मन का हर भ्रम।
उसकी आंखों में झलकता है प्यार, जैसे सागर में चमकते हों हजारों सितार।

मेरी प्रियतमा है गीतों की तान, जो बना दे हर क्षण को मधुर गान।
उसकी बातें हैं शहद की धार, जो दिल को करतीं बार-बार बेकरार।

मेरी प्रियतमा है जीवन का रंग, उससे ही खिलता है हर उमंग।
वो है दुआओं का साकार रूप, जिससे मिलता है सुख का स्वरूप।

मेरी प्रियतमा है आत्मा का साथी, हर जन्म में जिसकी होगी थाती।
उसके बिना अधूरा है 'साहिल' का जीवन, वो ही है मेरा सच्चा सावन।

सत्य क्या है

सत्य है जीवन का उजियारा, जो मिटा दे हर भ्रम का धुंधलका सारा।
यह न झुकता है, न टूटता है, हर परीक्षा में अडिग खड़ा रहता है।

सत्य है मन की निर्मल धारा, जो बहती है बिना किसी सहारा।
यह न समय से बंधता है, न स्थान से, सत्य है शाश्वत, हर युग, हर प्राण से।

सत्य है साहस का पहला कदम, जो दिलाता है आत्मा को परम आनंद।
यह न बिकता है, न छुपाया जा सकता, सत्य को केवल जिया जा सकता।

सत्य है दीपक की वह लौ, जो अंधेरों में भी राह दिखाए संजो। यह है विश्वास का सबसे बड़ा आधार, सत्य से ही मिलता है जीवन का सार।

सत्य है ईश्वर का सजीव रूप, जो देता है जीवन को को सच्चा स्वरूप।
सत्य ही है धर्म, सत्य ही है ज्ञान, सत्य से ही 'साहिल' के जग में होता कल्याण।

बादल और बिजली

बादल है सपनों का कारवाँ, लाता है बरसात का गान।
कभी शीतल, कभी गंभीर, धरती को देता जीवन अधीर।

बिजली है आकाश की पुकार, चमक में छिपा है उसका सार।
कभी डराए, कभी जगमगाए, अंधेरी रात को रोशनी दिलाए।

बादल और बिजली का संगम, है प्रकृति का अद्भुत क्रम।
एक बरसाए, एक चमक दिखाए, धरती को जीवन से भर जाए।

बादल है कोमलता की निशानी, बिजली है शक्ति की कहानी।
दोनों मिलकर सिखाते यही, नरमी और ताक़त जरूरी सही।

बादल और बिजली का खेल, है जीवन का अनोखा मेल।
जहाँ हो संतुलन का आधार, वहीं खिलता है 'साहिल' का संसार।

डर

डर है मन का अदृश्य साया, जो सपनों के आगे दीवार बनाए।
कभी अंधेरों में छुपकर आता, कभी उजालों में भी डराता।

डर है अनजाने का भ्रम, जो रोक दे कदम हरदम।
कभी असफलता का आभास, कभी भविष्य का अनजान विश्वास।

डर है परंतु एक शिक्षक भी, जो सिखाता है साहस तभी।
गिरकर उठना, हारकर जीतना, डर को हराकर आगे बढ़ना।

डर है भीतर की कसौटी, जो परखती है हिम्मत की मोटी।
जो इसे जीत लेता है, वही जीवन में सफल होता है।

डर है छाया, साहस है प्रकाश, दोनों से बनता है जीवन का आभास ।
डर को साथी नहीं, चुनौती मानो, साहस से 'साहिल' की हर राह आसान जानो।

उदासी

उदासी है मन का सन्नाटा, जैसे सूना हो कोई आँगन सारा।
हँसी के बीच छिपा एक दर्द, जो कह न पाए कोई भी शब्द।

उदासी है आँखों की नमी, दिल में छुपी अनकही कमी।
भीड़ में रहकर भी अकेलापन, जैसे जीवन हो बिन अपनापन।

उदासी है टूटी हुई आस, सपनों का बिखरा हुआ विश्वास।
कभी यादों का बोझ बन जाए, कभी खामोशी में आँसू लाए।

उदासी है परछाई की तरह, साथ चले हर राह पर सदा।
पर यही सिखाती है मन को, कैसे ढूँढें उजाला अंधेरों में खुद को।

उदासी है जीवन का एक रंग, जो बनाता है 'साहिल' को दंग।
ग़म के बाद ही मिलती है हँसी, उदासी के बाद ही खिलती है रोशनी।

लेखक और क़लम

लेखक है विचारों का सृजनहार, कलम है उसका सच्चा हथियार।
दोनों का संग है अनुपम गान, जहाँ जन्म लेता है नया जहान।

लेखक है सपनों का चित्रकार, क़लम से रचता है संसार।
शब्दों में भरता है रंग, मन के भावों को करता प्रसंग।

क़लम है स्याही की धारा, जो लिखती है जीवन का सहारा।
कभी कविता, कभी कहानी, कभी सत्य, कभी कल्पनावाणी ।

लेखक है समाज का दर्पण, क़लम से दिखाता हर आवरण।
अन्याय पर प्रहार करे, सत्य और न्याय का प्रचार करे।

लेखक है समाज का दर्पण, क़लम से दिखाता हर आवरण।
अन्याय पर प्रहार करे, सत्य और न्याय का प्रचार करे।

लेखक और क़लम का मेल, है ज्ञान और संस्कृति का खेल।
जहाँ शब्दों की शक्ति जगमगाए, वहीं मानवता का दीप जल जाए।

क़लम है 'साहिल' की आत्मा की तान, जिससे गूंजता है युगों का गान।
दोनों मिलकर रचते इतिहास, देते हैं जीवन को नया प्रकाश।

भाषा और लिपि

भाषा है मन की अभिव्यक्ति, भावों की मधुर सृष्टि।
शब्दों में ढलकर बोलती, दिल से दिल का फ़ासला खोलती।

लिपि है भाषा का आकार, जो देती है उसे स्थायी आधार।
काग़ज़ पर उतरते हैं विचार, लिपि बनाती है उनका संसार।

भाषा है रिश्तों की डोर, जो जोड़ती है दिलों का छोर ।
कभी गीत, कभी कहानी बन जाए, कभी आँसू, कभी मुस्कान लाए।

लिपि है संस्कृति की पहचान, जो सहेजती है पीढ़ियों का मान।
हर अक्षर में छिपा इतिहास, लिपि से मिलता है ज्ञान का प्रकाश।

भाषा और लिपि का संगम, है सभ्यता का अनुपम क्रम।
एक बोले, दूसरी लिख जाए, दोनों मिलकर अमरत्व दिलाए।

भाषा है 'साहिल' की आत्मा की आवाज़, लिपि है उसका सजीव अंदाज़।
दोनों संग हों जब एक साथ, ज्ञान जगमगाए हर प्रभात।

भक्त और भक्ति

भक्त है समर्पण की मूरत, भक्ति है प्रेम की सूरत।
दोनों का संग है अनुपम गान, जहाँ मिलता है ईश्वर का ध्यान।

भक्त है विश्वास का दीपक, भक्ति है उसकी ज्योति अपार।
अंधेरों में राह दिखाती, मन को करती निर्मल और पार।

भक्त है विनम्रता का प्रतीक, भक्ति है आत्मा का संगीत।
जहाँ अहंकार मिट जाता है, वहीं सच्चा मिलन हो पाता है।

भक्त है साधना की राह, भक्ति है जीवन की चाह।
कर्म और प्रेम का संगम यही, भक्त और भक्ति का मिलन सही।

भक्त और भक्ति का मेल, है जीवन का पावन खेल।
जहाँ हो श्रद्धा, जहाँ हो विश्वास, वहीं उतरता है 'साहिल' के ईश्वर का आभास।

परिंदें

परिंदे हैं सपनों की उड़ान, जो ले जाती हैं दिल को को आसमान।
नन्हीं मुस्कान, चमकती आँखें, परिंदे हैं खुशियों की झाँकें।

परिंदे हैं मासूमियत की निशानी, हर दिल में जगाती कहानी।
जहाँ हो अंधेरा, वहाँ रोशनी लाएँ, पंखों से उम्मीद के दीप जलाएं।

परिंदे हैं कल्पना का संसार, जहाँ हर पल होता है खूबसवार।
नफ़रत मिटाकर प्रेम जगाएँ, दुनिया को रंगों से सजाएँ।

परिंदे हैं मन की मधुर तान, जो भर देती हैं जीवन में जान।
सपनों को सच करने का संदेश, परिंदे देती हैं विश्वास विशेष।

परिंदे हैं दया और करुणा का रूप, जो जोड़ती हैं हर दिल का स्वरूप।
जहाँ परिंदे हों संग-संग, वहीं खिलता है 'साहिल' का जीवन रंग।

नियति

नियति है जीवन का अनजाना राज़, जिसमें छिपे हैं सुख-दुख के अंदाज़ ।
कभी हँसी, कभी आंसू की धार, नियति ही लिखती है हर व्यवहार।

नियति है समय की मौन कहानी, जिसमें बसी है हर इंसानी।
कभी राहें आसान बना दे, कभी कांटों से मन को सजा दे।

नियति है संघर्ष का साथी, जो सिखाती है धैर्य की थाती।
गिरकर भी जो उठना सिखाए, हर हार को जीत में बदल जाए।

नियति है विश्वास का दीप, जो अंधेरों में जलता अतीव ।
कदम बढ़ाओ, रखो भरोसा, नियति ही खोलेगी हर रोशनी का दरवाज़ा।

नियति है जीवन का सत्य महान,जिससे बचना नहीं इंसान।
पर कर्म से 'साहिल' राह बनाए, वही नियति को भी अपने संग लाए।

साहित्य और समाज

साहित्य है समाज का दर्पण, जिसमें झलकता हर रंग-रूप-आवरण।
कभी हँसी, कभी आँसू की धार, साहित्य दिखाता है जीवन का सार।

समाज है विचारों का संगम, जहाँ हर दिल है एक आलम।
साहित्य उसे दिशा दिखाता, सही-ग़लत का भेद बतलाता।

साहित्य है शब्दों की शक्ति, जो बदल दे सोच की भक्ति।
अन्याय पर प्रहार करे, सत्य और न्याय का प्रचार करे।

समाज है साहित्य की ज़मीन, जहाँ बोए जाते विचारों के बीज।
साहित्य से ही खिलते फूल, जो बनाते जीवन को अनुकूल।

साहित्य और समाज का मेल, है संस्कृति का अनोखा खेल।
एक लिखे, दूसरा जीए, दोनों मिलकर मानवता सींचे।

साहित्य है 'साहिल' की आत्मा की आवाज़,
समाज है उसका सजीव अंदाज़।
दोनों संग हों जब एक साथ,
तो होता है आभास नया खास।

पहला सफ़र

पहला सफ़र है सपनों की उड़ान, दिल में उमंगें, आँखों में गान।
अनजानी राहें, नया आसमान, हर कदम पर है उत्साह महान।

पहला सफ़र है उम्मीद का साया, हर मोड़ पर कुछ नया पाया।
डर भी है, पर हिम्मत भी साथ, जिज्ञासा से भरता है हर एक बात।

पहला सफ़र है सीख का दौर, खोलता है जीवन के नए छोर।
हर दृश्य में छुपा है संदेश, हर अनुभव है अनमोल परिवेश।

पहला सफ़र है यादों का खज़ाना, जिसे दिल में संजोता है हर ज़माना।
वो लम्हा बनता है जीवन का गीत, जो देता है साहस और नई प्रीत।

'साहिल' का पहला सफ़र है शुरुआत की पहचान,
जिससे सजता है जीवन का जहान।
यह बताता है आगे की राह, पहला सफ़र है जीवन की चाह।

राष्ट्रीय सेवा योजना

युवाओं की शक्ति को यह मजबूत करें,
बेरंग नीरस जीवन शैली में यह रंग भरे,
सामाजिक अत्याचारों का होता है अंत,
वैचारिक क्रांति का ज्ञान है इसमें अनंत,
देश के विकास के लिए युवाओं को है सोचना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

इंसानियत का चारों ओर अलख है जगाना,
सही गलत का अंतर लोगों को है बताना,
स्वतंत्रता रूपी परिधान को अब नहीं है खोना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

स्वच्छ भारत अभियान चलाकर,
एकता का लोगों को पाठ-पढ़ाकर,
शिक्षा की क्रांति से लोगों को उठाएंगे,
ईर्ष्या-द्वेष-छल-कपट को देश से मिटायेंगे,
सत्य के मार्ग पर शांति को है खोजना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

अनुशासन, एकता और कर्तव्यों का होता है जब ज्ञान,
परोपकार और दयालुता ही इसकी पहचान,
कहता है "साहिल" मेहनत को दिल में भर जाओ,
कभी याद करेगा जमाना, कुछ ऐसा कर जाओ,
ठान लो युवकों तुम, मंजिल तक है पहुंचना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

यह है स्वयंसेवकों का आधार,
वसुधैव कुटुंबकम ही है इसका सार,
इतिहास में नया कीर्तिमान रचाया है,
विश्व को अपना परिवार बनाया है,
अब हमें इसका साथ नहीं है छोड़ना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।

लेता हूं प्रण मैं, इतिहास में इसका नाम ऊंचा कर जाऊंगा,
ना रुकूँगा, ना थकूंगा और ना झुकूंगा,
आग है सीने में, जज्बा है सांसों में,
उम्मीद है आंखों में, इसे साकार रूप दे जाऊंगा,
हिंदुस्तान की शान को है संजोना,
देश का आधार स्तम्भ है राष्ट्रीय सेवा योजना।